-: सम्पादक :-
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
- सहायक -
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूकी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही !

मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231

e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/-
वार्षिक	रु० 100/-
विशेष वार्षिक	रु० 500/-
विदेश में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ-226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एव दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

मई, 2007 वर्ष 6 अंक 03

मज़दूर का ख़याल

मज़दूर को उस की मज़दूरी उस का पसीना ख़ुश्क होने से पहले दे दो। (हदीस)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❐ बातें एजूकेशन की	सम्पादकीय	3
❐ क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंज़ूर नोमानी	5
❐ प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	6
❐ हमारी बादशाही (हिन्द)	मौ० अब्दुस्सलाम किदवई	8
❐ कन्या भ्रूण हत्या	मौ० अब्दुल करीम पारीख	12
❐ इस्लाम मुसलमान	डॉ० शराफत हुसैन	14
❐ दुशमनों से प्यार	अल्लामा सय्यिद सुलैमान नदवी	16
❐ आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	20
❐ अल्लाह की बड़ाई	मौ० खुर्रम अली	21
❐ सोचना महत्वपूर्ण	आसिफ जलाल	22
❐ वेदों की मालूमात	इदारा	24
❐ थायराइड	डॉ० राजेश अग्रवाल	25
❐ शिक्षा और सज़ा	मु. इकबाल	27
❐ सिग्रेट और शराब		-
❐ इस्लामी फ़िक़्ह में इमाम अबू हनीफ़ा	डॉ० मुहम्मद रफी	28
❐ अमल में इख़लास	अब्दुर्रशीद खैरानी	29
❐ नई किताब	इदारा	31
❐ इस्लामी हथियार	मुहसिन खां	32
❐ नफ़्ली हज्ज	माखूज	33
❐ जेब्रे जैसा हुदहुद	माखूज	34
❐ अहकामे तब्लीग	मौ० शाह अब्रारूल हक	35
❐ पवित्र कुर्आन के साथ हमारा व्यवहार	अताउल्लाह सिद्दीकी	37
❐ तालीम व तर्बियत	इदारा	38
❐ अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी	40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

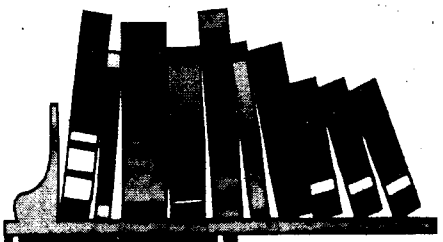

बातें एजूकेशन की

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

मार्च १९४८ ई० में मिडिल का इम्तिहान दिया, आज़ादी (स्वतंत्रता) का दूसरा ही साल था। उस्तादों ने अपने एक एक शागिर्द में वतन की ख़िदमत का जज़बा भर दिया था और आज़ादी को कारआमद बनाने के न जाने कितने गुर सिखाए थे, अगर्चि गान्धी जी के क़त्ल ने अहले वतन को हिला कर रख दिया था, लेकिन हमारे उस्तादों ने साफ़ कहा था बेटो! यह आज़माइश की घड़ी है अगर हिम्मत हारे तो यह आज़ादी ग़ुलामी से बदतर हो जाएगी लेकिन अगर मुल्क को आगे बढ़ाने के मक़सद पर जमे रहोगे तो आज़ादी का फ़ाइदा पाओगे। मुल्क को आगे बढ़ाने की ख़िदमत में हमारे उस्तादों ने हम लोगों के ज़िम्मे एक ख़िदमत यह भी रखी थी कि हमारा हर शागिर्द अपने महल्ले और अपने गांव के हर अनपढ़ को लिखना पढ़ना सिखा दे।

मैं अपने गांव का अकेला था जिसने मिडिल का इम्तिहान दिया था बल्कि कम से कम दस गांवों में मैं और एक दूसरे गांव के मेरे दोस्त गया प्रसाद यादव ने मिडिल का इम्तिहान दिया था। मैंने गांव का जाइज़ा लिया तो ६८ फ़ीसद (प्रति शति) लोग लिखना पढ़ना न जानते थे ४०० की आबादी में मुश्किल से मर्द औरत मिला कर ८ लोग मअ़मूली लिख पढ़ लेते थे। चिट्ठी लिखाने के लिए तो मेरे वालिद साहिब के पास लोग दूर दूर से आते थे। वह उर्दू में चिट्ठी लिखते मिडिल पास करने के बअ़द मैंने देखा शायद ही वह कोई लफ़्ज़ सहीह लिख पाते हों लेकिन पढ़ने वाला पूरी चिट्ठी अच्छी तरह समझ लेता था।

मैंने गांव के अनपढ़ों से जब अपने उस्तादों की बात और अपना इरादा बताया तो लोग बहुत ख़ुश हुए, अस्ल में गांव के लोग पढ़े लिखे तो न थे, लेकिन इस कमी ने उनको अ़क़्लमन्दी (ज्ञान) पैदा करने की तरफ़ मोड़ दिया था चुनांचि एक से एक ज्ञानी थे, मेरे वालिद साहिब उन सब के सरदार थे और ज्ञानी ही के नाम से पुकारे जाते थे। उन ज्ञानियों की बातें सुनने से तअ़ल्लुक़ रखती थीं। खास तौर से उस वक़्त जब वह किसी झगड़े की पंचायत में झगड़े का तज्ज़िया (समीक्षा) करते और अपना फ़ैसला सुनाते, यही वजह थी कि जब मैं ने लिखना पढ़ना सीखने की बात रखी तो सब ने उस का इस्तिक़्बाल (स्वागत) किया और शाम को लालटेनों के उजाले में लगभग ५० बालिग़ (प्रौढ़) मुझसे पढ़ने लगे जब कि मैं उस वक़्त केवल १५ वर्ष का था। शाम को तो में बाक़ाइदा (नियमित रूप से) पढ़ाता दिन में भी खेत खलयान और रास्ते में नाम लिखना तो जिसे पाता सिखा देता। वाज़ेह रहे कि यह सारी ख़िदमात मुफ़्त थी। मेरे कई साथी नार्मल ट्रेनिंग में चले गये और मुदर्रिस (अध्यापक) हो गये मेरी उम्र कम थी अगर्चि हिसाब में डिस्टिंक्शन था। १९५३ से मैं एक दीनी मदरसे में पढ़ाने लगा, मैंने अपनी उपज से तालीम (शिक्षा) के तरीक़े निकालता और सद फ़ीसद (शत प्रतिशत) काम्याब (सफल) होता। अब मैंने नार्मल का ख़याल छोड़ दिया, दौराने तअ़लीम मैं अपनी तअ़लीम भी बढ़ाता रहा, हाई स्कूल, इण्टर, बी०ए० एम० ए०, डाक्ट्रेट उसी दौराना मैंने बच्चों की नफ़्सीयात (बाल मनोविज्ञान) और एजूकेशन का मुतालआ (अध्ययन) किया। किंग सअ़ूद युनीवर्सिटी के एजूकेशन फ़ेकल्टी से इस्लामियात में

एम०ए० किया यह सारी बातें मैंने इसलिये लिखीं ताकि तअ़्लीम से मुतअ़ल्लिक़ (शिक्षा सम्बन्धी) जो बात कहूं उस पर ध्यान दिया जाए।

ब्रिटिश दौर (काल) में प्राइमरी दरजात में मज़ामीन (विषयों) की भरमार न थी, हिसाब और ज़बान ही मेन सब्जेक्ट थे, दर्जा तीन (३) से जुग़राफ़िया (भूगोल) भी पढ़ाई जाती। प्राइमरी में हिसाब (गणित) तो इतना हो जाता कि आज आठवे तक भी उतना हिसाब नहीं पढ़ाया जाता है, मश्क २५ का पचीसवां सुवाल मशहूर था, फ़ीसद सूद मुफ़रद (साधारण ब्याज) सूद मरक्कब (चक्रवृद्धि ब्याज) कसरे मुल्तफ़ (लंगड़ी कसर) के बड़े बड़े सुवालात दर्जा चार में हल किये जाते, चहारूम पास कर के मिडिल में आना होता पांचवा दर्जा मिडिल का पहला दर्जा होता सातवां पास मिडिल पास कहलाता।

आज़ादी (स्वतंत्रता) से पहले ही बेसिक प्राइमरी स्कूल शुरूअ़ हो चके थे जिनमें बअ़ज़ मज़ामीन का इज़ाफ़ा हुआ था, आज़ादी के बअ़द तो सारे सरकारी प्राइमरी स्कूल्स बेसिक स्कूल की तरह हो गये और सब में ज़बान और हिसाब के साथ तारीख़, तमद्दुन, जुग़राफ़िया (समाज विज्ञान) और साइन्स (विज्ञान) जैसे विषय भी पढ़ाए जाने लगे यह कोर्स माहिरीन से तंय्यार करवाया गया और पढ़ाने वालों के लिए ट्रेनिंग शर्त क़रार पाई। ट्रेनिंग में टीचरों को बच्चों की नफ़्सीयात (बाल मनोविज्ञान) से वाक़िफ़ (अवगत) कराया गया पढ़ाने के बहुत ही अच्छे गुर बताए गये लेकिन उनको यह न बताया गया कि अगर तुम अपने काम में जान बूझ कर कोताही करोगे तो इन्तिज़ामिया (प्रशासन) से चाहे छुप कर चाहे घूस देकर बच जाओ मगर अस्ल मुन्तज़िम (वास्तविक प्रशासक) अल्लाह (ईश्वर) की पकड़ से नहीं बच सकते उसकी पकड़ इस दुन्या में भी हो सकती है और मरने के बअ़द तो सुकून पा ही नहीं सकते हो। लेकिन यह सच उन को बताता कौन ख़ुद ट्रेनिंग देने वाले इस सच से दूर थे। नतीजा क्या हुआ ? ट्रेन्ड टीचरों ने अपनी भारी तन्ख़्वाहों को अपनी हुनर मन्दी का सिला समझ लिया (इन्नमा ऊतीतुहू अ़ला अ़िल्मिन अ़िन्दी) और अपनी कार कर्दिगी में अपनी तदबीर से इतनी कोताही की कि आज एक ग़रीब आदमी भी अपने बच्चे को सरकारी प्राइमरी स्कूलों में सिर्फ़ दोपहर के खाने या पाव भर यौमिया गेहूं के लिए भेजता है आज यह गैहूं या दोपहर का खाना बन्द हो जाए तो शायद हमारे ट्रेन्ड टीचर तलबा के रजिस्ट्रों की फ़र्ज़ी ख़ाना पुरी के लिए मज्बूर हो जाएं। हमारे ट्रेन्ड टीचरों ने ट्रेनिंग कोर्स के साथ एक टेक्निक यह ईजाद कर ली की किस तरह जीरो वर्क पर गुड वर्क की सनद ली जा सकती है।

इधर बहुत अच्छे क्वाली फ़ाइउ बेकार लोगों की एक भीड़ तय्यार हो गई उन्होंने तदबीरें सोचीं और माडर्न क़िस्म के के०जी०, नरसरी स्कूलों की भरमार कर दी। इन स्कूलों में सरकारी प्राइमरी टीचरों से ज़ियादा लोग खप गये और सरकारी प्राइमरी स्कूलों से इन स्कूलों की तादाद भी ज़ियादा हो गई और सारे स्कूल बच्चों से भर गये बेशक इन स्कूलों का निज़ाम (DIS-CIPLINE) बहुत अच्छा है। यूनीफार्म है, सारे बच्चे यक्सा लिबास (वस्त्र) में बड़े अच्छे लगते हैं, टीचर्स के लिए भी लिबास की पाबन्दियां (प्रतिबन्ध) है। (जब कि सरकारी प्राइमरी स्कूल के टीचर्स धोती कुर्ता पहने तम्बाकू (खैनी) मलते या पल्लून शर्ट पहने सिग्रेट का धुवां उड़ाते देखे जा सकते हैं) इन नरसरी स्कूलों में वक्त की पाबन्दी होती है। कोई बच्चा नज़र अन्दाज़ नही होता, बच्चों को लाने ले जाने के लिए रक्शों या मिनी बसों का इन्तिज़ाम होता है। लेकिन यह तअ़लीम दो ऐब रखती है १. महंगी है २. निसाब (पाठ्यक्रम) के लिहाज़ से बोझल है, मंहगा होने के सबब ग़रीब बच्चे इन स्कूलों की तअ़लीम (शिक्षा) से महरूम (वंचित) हैं। चाहिए कि सरकार

(शेष पृष्ठ ७ पर)

क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

तर्जमा :– और ऐ पैगम्बर ! आप उन को करीब से आने वाली क़ियामत के दिन से खबरदार कर दीजिये जब कि कलेजे मुंह को आ रहे होंगे (और लोग डर और घबराहट के मारे अपने दिलों को दबा रहे होंगे कि कहीं मुंह के रास्ते निकल न जाये) उस दिन जालिमों मुजरिमों का कोई यार–व–मददगार न होगा और न कोई ऐसा सिफारिशी होगा जिस की बात मान ली जाए। (बस फैसला अल्लाह के हाथ में होगा जो,) जानता है आंखों की चोरी को और सीनों के छुपे राजों तक को। (मुअमिनूनः १८,१६)

और सूरए–यॉसीन में कियामत के दिन मुजरिमों की जिल्लत व रूसवाई और बेबसी का कपकपी पैदा करने वाला एक इबरतनाक मन्जर यह बयान किया गया है :–

तर्जमा :– आज के दिन हम उन के मुंहों पर मुहर लगा देंगे, और उनके हाथ हम से बोलेंगे (और उनके अमल की रूदाद सुनायेंगे) और उनके पाँव उन के आमाल की गवाही देंगे।

कुरआने–मजीदे में जगह–जगह बयान किया गया है कि हर एक को सिर्फ अपनी पड़ी होगी और करीब तरीन अजीज भी उस दिन किसी के काम न आयेंगे, बस नफ्सी–नफ्सी का आलम होगा–सूरए अबस में इस हालत का कैसा प्रभाव शाली और कपकपी पैदा करने वाला नक्शा खींचा गया है।

तर्जमा : तो जब कानों को बहरा कर देने वाली चीख पुकार बरपा होगी, जिस दिन कि (परेशानी और घबराहट का यह आलम होगा कि) भागेगा आदमी अपने भाई से, और अपने मां–बाप से, और अपनी बीवी और अपनी औलाद से (अपने इन प्यारों के साथ भी कोई हमदर्दी नहीं करेगा) उस दिन हर आदमी को अपनी ऐसी फिक्र होगी जो किसी और की तरफ उस को ध्यान देने ही न देगी। बहुत से (खुदा के बन्दों के) चेहरे उस दिन रौशन, हंसते हुए, मसरूर होंगे और बहुत से चेहरे (मुजरिमों के) उस दिन ऐसे होंगे कि उन पर खाक पड़ी होगी और सियाही चढ़ी होगी।

अभी अर्ज किया जा चुका है कि कुर्आन मजीद का जियादा अंश क़ियामत और हश्र–नश्र के मुतअल्लिक इसी तरह के बयानों से भरा है। यहां सिर्फ चन्द आयतें ही नक्ल करदी गयी हैं। बल्कि कुर्आने–मजीद की चंद पूरी–पूरी सूरतें भी क़ियामत और आखिरत ही के बयान से भरी हुई है। चुनान्चे सूर–ए–वाकिआ, सूरए–हाक्का, सूरए – कियामा, सूरए–तकवीर, सूरए–इनशिकाक, सूरए– गाशिया में क़ियामत और आखिरत ही के हालों और मन्जरों का बयान है इन बड़ी–बड़ी सूरतों के नक्ल करने की तो गुंजाइश नहीं, ताहम एक छोटी सी सूरत जिस में सिर्फ कयामत ही का बयान है, यहां भी पढ़ लीजिए।

तर्जमा : जब जमीन क़ियामत के भूंचाल से तितर बितर कर दी जायेगी और अपने अंदर के बोझ (दफन मुर्दे और दूसरी चीजें) जमीन बाहर निकाल देगी और इन्सान इस हालत को देख कर कहेगा कि इस जमीन को यह क्या हुआ? उस दिन जमीन अपनी सब खबरें बयान करेगी (कि फलां बन्दे ने मुझ पर यह अच्छा या बुरा अमल किया और फुलां ने यह किया) इसवजह से कि तेरे रब ने हुक्म दिया होगा उस को, उस रोज लोग अलग–अलग टोलियों में बट कर लौटेंगे ताकि अपने आमाल देंखें (और उन का सिला पायें या सजा भुगतें)। पस जो शख्स यहां जर्रा बराबर अमल करेगा वह उस को वहां देख लेगा और जो जर्रा बराबर बुरा अमल करेगा वह वहां उस के सामने आजायेगा। (सूर–ए– जिलज़ात)

डरते रहो ख़ुदा से ताकि नजात पाओ
ऊपर हर एक बात को तुम रब की बात लाओ
है ज़लज़ला भयानक कुछ शक नहीं है इस में
आएगा वो अचानक कुछ शक नहीं है इस में
जब दूध पीता बच्चा भूलेगी मां उसे भी
जो पेट में है बच्चा उस को वहीं जनेगी
ऐसा लगेगा वो सब मजनून हैं नशे में
लेकिन नशा न होगा प्रकोप की है ज़द में
उड़ते पहाड़ होंगे धुन्की हुई रूई से
यह सूर पहला होगा सुन लो इसे अभी से।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

मुसलमान की तहकीर (अपमान)

हजरत अबू हरैरा (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुसलमान भाई भाई हैं। न उन की खियानत करें, न उनसे झूठ बोले, न उनको रूस्वा करें। हर मुसलमान पर मुसलमान का खून, उसका माल और उसकी इज्जत हराम है। आपने फरमाया तकवा यहां है (यानी दिल में है) और इन्सान के लिए इतनी ही बुराई काफी है कि वह अपने मुसलमान भाई को हकीर समझे।

मुसलमान के हकूक

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि एक दूसरे से हसद न करो। और आपस में झगड़ा न करो। एक दूसरे से गुस्सा न करो। और न कतअ रहिमी करो। और सौदा लेके मोल तोल हो जाने पर दूसरा अपना सौदा न पेश करे। और अल्लाह के बन्दे भाई भाई हो जाओं। मुसलमान मुसलमान का भाई है न उस पर जुल्म करे न हकीर समझे न जलील करे। और तकवा यहां है। आपने अपने सीने की तरफ तीन मर्तबा इशारा किया और इन्सान के लिए इतनी बुराई काफी है कि वह अपने मुसलमान भाई को हकीर समझे। मुसलमान पर मुसलमान का खून, उसका माल, उसकी इज्जत हराम है।

मोमिन की तारीफ

हजरत अनस (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वही अपने भाई के लिए न चाहे जो अपने लिए चाहता है। (बुखारी मुस्लिम)

जालिम की मदद क्या है

हजरत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अपने मुसलमान भाई की मदद करो। वह जालिम हो या मजलूम। एक आदमी ने कहा या रसुलल्लाह मजलूम हो तो उसकी मदद करूँ और जालिम की मदद किस तरह करूं। आपने फरमाया, उसको जुल्म से रोको और मना करो यह उसकी मदद है।

मुसलमान के पांच हक है

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, मुसलमान के मुसलमान पर पांच हक है। १. सलाम का जवाब देना। २. मरीज की इयादत करना ३. जनाजे के साथ होना ४. दावत कुबूल करना ५. छींक पर यरहमुकल्लाह कहना।

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि मुसलमान पर मुसलमान के छः हक हैं। १ जब मुलाकात हो तो सलाम करें। २ दावत दी जाये तो कुबूल करें। ३ जब नसीहत चाहे तो खैरख्वाही करें। ४ जब छींक आये तो यरहमुकल्लाह कहे। ५ बीमार की इयादत करें। ६ जनाजे के साथ हो।

हजरत बरा बिन आजिब (र०) से रिवायत है कि हमको रसुलुल्लाह सल्लललाहु अलैहि व सल्लम ने सात चीजों का हुक्म दिया है। और सात चीजों से मना फरमाया है। हुक्म यह है कि १ मरीज की इयादत करो। २ जनाजे के साथ हो ३ छींक पर यरहमुकल्लाह कहो। ४ कसम खाने वाले की कसम पूरी करो। ५ मजलूम की मदद करो। ६ दावत को कुबूल करो। ७ और सलाम को फैलाओं सोने की अंगूठियों से या सोने की अंगूठी पहनने से, चांदी के बर्तन में पानी पीने से, सुर्ख कपड़ो से, रेशम के कपड़ों से और इस्तबरक और दीबा से मना फरमाया है।

दुन्या में पर्दापोशी से आखिरत में पर्दा पोशी

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि जो अल्लाह का बन्दः किसी अल्लाह के बन्दे की सत्रपोशी करेगा अल्लाह उसकी कियामत में पर्दपोशी करेगा।

गुनाह का एलान

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसुलल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया,मेरी उम्मत के सब लोग मुआफ कर दिये जायेंगे। सिवाये अलानिया गुनाह करने वालों के और अलानिया गुनाह करना यह है कि आदमी रात को कोई गुनाह करे और वह छुपा ढका हो फिर सुबह खुद ही उसका एलान कर दे और कहे कि

मैंने रात को इस तरह किया। अल्लाह ने तो उसको छुपाया था। उसने खुद ही अपना पर्दःफाश किया।

लौण्डी की सजा

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब लौण्डी बदकारी करे और उसके उस फेल की तहकीक हो जाये तो उसको हद लगाई जाये। और डांट फटकार न की जाये। फिर अगर दोबारा उससे यह फेल सरजद हो तो उसको हद लगाई जाये। और जज्र व तौबीख न की जाये। अगर तीसरी बार फिर यही अमल करे तो उसको बेंच डाले। ख्वाह बाल की रस्सी के मुआवजः में। (अब दुन्या में लौंडिया नहीं रहीं)

शराब पीने की सजा

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में एक आदमी लाया गया जिसने शराब पी थी। आपने फरमाया, इसको मारो पीटो। हजरत अबू हुरैरः (र०) कहते हैं कि फिर कोई तो हाथ से मार रहा था कोई जूतों से, कोई कपड़ों से जब वह वापस चला गया तो एक शख्स ने कहा कि अल्लाह तुझे रुस्वा करे। आपने फरमाया, यह मत कहो। शैतान की इसके मुकाबले में मदद न करो। (बुखारी)

मुसलमानों की मदद की फजीलत और नफा

हजरत इब्नि उमर (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, मुसलमान भाई भाई हैं। न उन पर जुल्म करे और न बे यार व मददगार छोड़े। और जो अपने भाई की हाजत पूरी करेगा अल्लाह उसकी हाजत पूरी करेगा। और जो किसी मुसलमान की तकलीफ को दूर करेगा अल्लाह तआला कियामत के दिन उसकी तकलीफों में से एक तकलीफ को दूर फरमायेगा। और जो किसी मुसलमान की सत्रपोशी करेगा अल्लाह तआला कियामत के दिन उस की सत्रपोशी फरमायेगा।

(पृष्ठ १२ का शेष)

बेसहारा बच्चीयों के लिए एक योजना पर विचार कर रही है ताकि बालिका हत्या के मामलों पर अंकुश लगाया जा सके।'' यह बयान स्वागत योग्य है परंतु इस योजना पर अमल होगा या नहीं इसमें मुझे शंका है, सरकारी योजना कई बार सिर्फ एक कागज तक ही सिमट कर रह जाती है। और कई काम ऐसे होते हैं जिसमें समाज का हाथ बंटाना और आगे आना अत्यंत आवश्यक होता है लेकिन समाज सिर्फ सरकार की तरफ निगाह और आस लगाए बैठा देखता रहे यह सही नहीं है। समाज का यह रवैया देश के लिए विनाश का कारण बन सकता है, अब समाज को इस समस्या पर जागरूक हो जाना चाहिए, और आगे बढ़कर इस अपराध को रोकने की पहल करनी चाहिए, सरकार भी इस समस्या पर गंभीर होती है, तो यह ताकत दुगुनी हो जाएगी।

अगर हमने यह नारी हत्या का गुनाह बंद नहीं किया तो हम इस संसार के मालिक की पकड़ से बच नहीं सकेंगे, इस संसार के मालिक के आदेश पर पहाड़ अपनी जगह छोड़ देंगे, दरया उबलने लगेंगे, फसलों का सत्यानाश होगा, आसमान से आग बरसेगी। जब हम उस मालिक की निर्मित को इस दुनिया में चैन से जिने नही देते, और उसे दुनिया में आने से पहले ही ऐसी मौत मारते हैं जो वहशीयाना है, तो हम उस मालिक से खुद के लिए रहम की उम्मीद कैसे कर सकते हैं।

मेरे भाईयो और बहनो हमें अब संभल जाना चाहिए और इस अपराध को रोकने के लिए पूरी ताकत के साथ हर संभव कोशिश करनी चाहिए, अल्लाह हम सब की मदद करे इसी दुआ के साथ मैं आपसे विदा होता हूं।

(पृष्ठ ४ का शेष)

इन संस्थाओं को पाबन्द करे कि कम से कम २५ प्रति शति ग़रीब बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देना होगी, इसके बिना ऐसे इदारों (संस्थाओं) को मान्यता न दे। निसाब में इदारा वालों को चाहिए कि माहिरीन से मशवरा कर के कुछ हल्का करें इसी तरह होम वर्क पर ध्यान दें, होम वर्क टीचर्स के पढ़ाए हुए दर्स (पाठ) की मश्क़ (अभ्यास) के लिए होता है। होम वर्क इस तरह का होना चाहिए कि बच्चे ने जो कुछ टीचर्स से पढ़ा है उस की मदद से ख़ुद से कर सके अगर बच्चा ट्यूटर के बिना होमवर्क नहीं कर सकता है तो होम वर्क की प्लानिंग ग़लत है या टीचर की टीचिंग में कमी है। लेकिन देखने में यह आता है कि होम वर्क की किताबें छपी हुई हैं, बच्चा समझे या न समझे उस को काम तो पूरा करना ही है, अब अगर घर के लोग क्वाली फ़ाइड हैं तो ख़ुद से होम वर्क करवाते हैं। अगर वह मशग़ूल हैं तो ट्यूटर रखना लाज़िमी है। मेरे नज़दीक ऐसा होम वर्क जो बच्चा ख़ुद से न कर सके टीचर की टीचिंग में कमी का संकेत देता है।

आखिरी किस्त

हमारी बादशाही हिन्दुस्तान

मौ० अब्दुस्सलाम किदवई

शेरशाह को अल्लाह तआला ने समझ ओर अकल ऐसी दी थी कि पांच ही वर्ष में सारे देश की काया पलट गई लेकिन उसके बाद फिर इस खानदान में ऐसे आदमी न हुए। फलस्वरूप हिमायूं ने फिर चन्द वर्ष बाद हिन्दुस्तान पर विजय प्राप्त कर ली लेकिन इतनी ही दिनों की गड़बड़ में जगह जगह रियासतें काईम हो गयीं। हिमायूं कोशिश कर रहा था परन्तु जिन्दगी ने साथ न दिया। एक दिन मग़रिब की अज़ान सुनकर पुस्तकालय से उतर रहा था जलदी में पैर फिसल गया और नीचे आ गया और इसी सदमें से उसका देहान्त हो गया। अकबर अभी तेरह वर्ष का लड़का था लेकिन बैरम खां की देखरेख में तख़्त पर बैठ गया। शुरू में बैरम खां ने और बड़े होकर अकबर ने सल्तनत का काम इस खूबी से चलाया कि लगभग पूरा भारत मुगलों के कब्जें में आ गया। अकबर के बाद जहांगीर शाहजहां, और आलमगीर (औरंगजेब) तीन और बड़े जबरदस्त बादशाह हुए। उन लोगों की हिम्मत, नीति और बहादुरी से सारे हिन्दुस्तान पर मुसलमानों का कब्जा हो गया और उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम हर तरफ उन्हीं का झण्डा उड़ने लगा। वैसे तो यह सब ही अच्छे थे लेकिन आलमगीर सबसे अधिक दीनदार और मजहब का पाबन्द था। यदि कहीं उसके बाद दो एक और ऐसे ही दीनदार, मजहबी और हिम्मत वाले बादशाह पैदा हो जाते तो हिन्दुस्तान में मुगल हुकूमत की जड़ें हमेशा के लिए मजबूत हो जातीं लेकिन अफसोस कि उसकी जगह लेने वाले बड़े कमजोर और बोदे निकले सन् १७०७ में आलमगीर का देहान्त हो गया। उसके बाद उसका बेटा मोअज़्ज़म बहादुर शाह प्रथम के नाम से बादशाह हुआ। यद्यपि इस में आलमगीर की सी शान न थी लेकिन इतना ढंग था कि पांच वर्ष तक सल्तनत को थामे रहा। १७१२ में उसका भी देहान्त हो गया और सल्तनत की चूलें ढीली होने लगीं। अब बादशाहत काहे को थी, बच्चो का खेल था। अमीरों और वजीरों ने जिसे चाह तख़्त पर बैठा दिया। जब मुख्य केन्द्र का यह हाल हो तो आगे मुल्क में जो हो जाए वह थोड़ा है। जगह जगह झगड़े उठ खड़े हुए और जिसका जहां जी चाहा बादशाह बन बैठा। यही मुसीबत क्या कम थी कि १७३७ में नादिरशाह का हमला हुआ जिस ने मुगलों की रही सही साख भी समाप्त कर दी। नादिरशाह तो लूटमार कर लौट गया लेकिन हिन्दुस्तान की दशा न ठीक हुई। नतीजा यह हुआ कि सारे देश में हड़बोंग मच गई। मरहठों, राजपूतों, जाटों और सिखों ने उधम मचा दी बस ऐसा मालूम होता था कि मुगलों का यहां से चल चलाव है और जल्द ही बादशाहत पर मरहटों का कब्जा हो जाने वाला है। लेकिन अल्लाह भला करे अहमदशाह अब्दाली का ज़िस ने पानीपत के मैदान में उन लोगों को प्राजित करके हमेशा के लिए उन का जोर तोड़ दिया। अहमदशाह चाहता तो हिन्दुस्तान में अपनी हुकूमत बना लेता लेकिन उसने ऐसा नहीं किया बल्कि सल्तनत खुदशाह आलम को सुपुर्द करके वापस चला गया। दुश्मनों का जोर टूट चुका था। उस समय मौका था कि सल्तनत को फिर से मजबूत कर लिया जाए लेकिन अब मुगलों में जिन्दगी की रूह समाप्त हो चुकी थी, इसलिए यह अवसर भी हाथ से जाता रहा और अफरा तफरी बाकी रही। उधर अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ता रहा। यह लोग तो पहले केवल व्यापार के लिए आए थे लेकिन बाद को धीरे धीरे सल्तनत में दखल देना शुरू कर दिया। सबसे पहले नवाब सिराजुद्दौला को प्राजित करके बंगाल पर कब्जा कर लिया (सन् १७५७) फिर देहली के बादशाह शाह आलम से बकसर के स्थान पर मुकाबला हुआ। (सन्१७६४) इस लड़ाई में अंग्रेजों की जीत हुई और देहली से लेकर बंगाल तक उनका कब्जा हो गया। शाहआलम के लिए २६ लाख पेंशन मुकर्रर हो गई। जो बाद में उनकी औलाद को भी मिलती रही। कोई सौ वर्ष तक यह शकल यूं ही चलती रही और अंग्रेजों के सहारे दिल्ली में नाम की बादशाहत काइम रही। इस अवध में हिन्दुस्तान के दूसरे सरदारों और नवाबों से मुकाबले रहे जिनमें अंग्रेजों की विजय हुई। आखिर सन् १८५७ में वह नाम की बादशाहत भी समाप्त हो गई।

अंग्रेजों की इन सफलताओं के

बावजूद हिन्दुस्तानियों के दिलों से आजादी का ख्याल निकला नहीं। १८५७ में इस विचार ने बड़े पैमाने पर स्वतंत्रता संग्राम का रूप धारण कर लिया। मुसलमान आजादी की लड़ाई में आगे आगे थे। बड़े जोश, बहादुरी और साहस के साथ उन्हों ने अंग्रेजों का तख़्ता उलटने की कोशिश की। कई महीने तक बड़ी लड़ाई होती रही। अबू जफर बहादुरशाह को बादशाह बनाया गया। जनरल बख़्त खां और मौलाना अहमदुल्लाह आदि ने जान की बाजी लगा दी हिन्दुस्तान के बहुत से नवाबों, राजाओं और सरदारों ने दिल खोल कर सहायता की। लोगों का जोश, उत्साह और बहादुरी को देखकर ख्याल होता था कि बस अंग्रेजों का चल चलाव है लेकिन जैसा कि पहले बयान किया जा चुका है कि हिन्दुस्तान के लोगों मे मिल जुलकर काम करने का जज्बा कम रह गया था। हर व्यक्ति अपनी मनमानी कार्यवाही करना चाहता था और आप जानते हैं कि एकता के बिना कोई छोटा सा काम भी नहीं चलता है, फिर लड़ाई तो बहुत कठिन कार्य है। इसमें तो बड़े तालमेल की आवश्यकता होती है लेकिन इधर सौ वर्षों से हिन्दुस्तानियों में एकता की जगह विभेद चक्र चल रहा था। इसलिए जोश, उत्साह और हजारों लाखों लोगों की कुर्बानी के बावजूद स्वतंत्रता संग्राम में सफलता न मिली। चन्द महीनों में सब मोरचों पर अंग्रेजों ने हिन्दुस्तानियों को प्राजित कर दिया और दिल्ली पर भी उनका दोबारा कब्जा हो गया। हजारों आदमियों को फांसियां दी गयीं, गोलियों से उड़ाया गया और ऐसा अत्याचार किया गया कि सारा देश थर्रा गया। राजाओं और नवाबों को कठोर सजाऐं दी गयीं।

अंग्रेजों ने इन अत्याचारों के बाद यह समझ लिया कि बस अब आजादी का जज़्बा हमेशा के लिए समाप्त हो गया मगर उनका ख्याल गलत निकला। स्वतंत्रता आनदोलन कुछ दिनों के लिए दबा लेकिन दिलों में यह ख्याल बराबर मौजूद रहा और १८५७ के कुछ वर्षों के बाद स्वतंत्रा आनदोलन दूसरे ढंग से शुरू हुआ। अब मैदाने जंग की जगह राजनीतिक जोड़ तोड़ से काम लिया जाने लगा। स्वतंत्रता की मांग बड़े साहस के साथ को गयी। इसके लिए पूरी कोशिश की गयी। तरह तरह के आन्दोलन चलाए गये और अंग्रेजों को मजबूर किया गया कि वह हिन्दुस्तान को आजाद कर दें। हिन्दुस्तानी मुसलमानों को सन् १८५७ ई० की जंग में बहुत नक्सान पहुंचा था। अंग्रेजों ने खास तौर से उन पर दिल दहलाने वाले अत्याचार किये थे ताकि उनको फिर कभी उन के खिलाफ खड़े होन की हिम्मत न हो लेकिन आजादी का जज्बा मुसलमानों के स्वभाव में है फिर मुसलमान किस तरह नीचे बैठ सकते थे। उन्होंने भी दिल खोलकर इस स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। न किसी से घबराए न किसी कुर्बानी से संकोच किया। तन मन धन से इस काम में लगे रहे। आखिर खुदा ने इस हिम्मत का यह बदला दिया कि अंग्रेजों को आजादी का एलान करना पड़ा।

१५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतंत्र हो गया। शासन व्यवस्था के बारे में बहुत से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले मुसलमान नेताओं का विचार था कि हिन्दुस्तान में संघ शासन बनाया जाए, मुसलमान इस में शामिल रहें और उनके विशेष हालात का देश के कानून में ध्यान रखा जाए। बहुत से अनुभवी मुसलमान नेता इस परस्ताव को पसन्द करते थे लेकिन मुसलमानों की अक्सरियत (अधिकांश मुसलमानों) ने अपनी अलग हुकूमत की मांग की। उनकी इस मांग पर मुस्लिम बाहुल इलाके (पश्चिमी पंजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान सरहद और पूरबी बंगाल) हिन्दुस्तान से अलग हो गये और पाकिस्तान के नाम से एक मुस्लिम हुकूमत काइम हो गयी लेकिन सन १९७१ में पूर्वी बंगाल उस से अलग हो गया और बंगला देश के नाम से नया राज्य स्थापित हो गया। शुरू में इस नई हुकूमत के राष्ट्रपति (सदर) शेख मुजीबुर्रहमान हुए लेकिन १५ अगस्त सन् १९७५ को वहां इन्कलाब आ गया। शेख मुजीबुर्रहमान मारे गये। उनके बाद मुश्ताक अहमद और मुहम्मद साइम राष्ट्रपति हुए। अंग्रेजों के जमाने में ब्रिटिश इण्डिया के अतिरिक्त पुराने जमाने की बहुत सी रियासतें भी थीं. जहां अंग्रेजों की देखरेख में हिन्दुस्तानी नवाब और राजा हुकूमत करते थे, मगर हिन्दुस्तान की आजादी के बाद यह रियासतें खत्म होकर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के राज्यों में शामिल हो गयीं। पहले उनके शासकों का गुजारा मुकर्रर कर दिया गया था सन् १९७२ में वह भी समाप्त कर दिया गया।

इस विभाजन से मुसलमान हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और बंगलादेश में बंट गये। इस बंटवारे से हिन्दुस्तानी मुसलमानों को बहुत नुक्सान पहुंचा। उनकी दशा कमजोर हो गयी और बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा लेकिन वह बड़ी हिम्मत से अपनी जगह जमे हुए हैं इन कठिनाईयों को हल करने के लिए बड़ी बुद्धिमानी और

कूटनीति से काम कर रहे हैं उनकी इस कोशिश का अच्छा नतीजा निकल रहा है। और हालात बेहतर होते जा रहे हैं। हिन्दुस्तानी मुसलमान अपनी जनसंख्या, योग्यता और विशेषता के कारण बहुत महत्व रखते हैं। आशा है कि भविष्य में उनकी योग्यताओं के जौहर चमकेंगे और देश के निर्माण और उन्नति में उनकी बड़ी भूमिका होगी। उनकी बदौलत इस्लाम के सेवा की नई राहें निकलेगी। और इस्लामी शिक्षा, कला और इस्लामी सभ्यता के सदा बहार बाग में उनके दम से नये गुलबूटे खिलेंगे।

हिन्दुस्तान की राजनीति और शासन में मुसलमान भी शरीक हैं। यहां लोकतंत्र व्यवस्था (जमहूरी निज़ाम) है। हर पांच वर्ष के बाद पुराना शासन समाप्त हो जाता है और लोक सभा में और प्रांतों की एसेम्बलियों के चुनाव होते हैं जिस पार्टी के सदस्य अधिक होते है, वही हुकूमत बनाती है और उसी के चुने हुए मंत्री शासन चलाते हैं। सबसे बड़ा पद राष्ट्रपति का होता है और देश का संरक्षक और नियंत्रक (निगरां) होता है लेकिन सारा प्रबन्ध प्रधानमंत्री और उसके चुने हुए मंत्री करते हैं। भारत के पहले राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद, दूसरे डा० राधा कृष्ण तीसरे डा० जाकिर हुसैन, चौथे वी०वी० ग्री पांचवे फख़रूद्दीन अली अहमद थे। इसके बाद डा० नीलम संजीव रेड्डी तथा ज़ैल सिंह राष्ट्रपति चुने गये। आजादी के बाद पहले प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू, फिर लाल बहादुर शास्त्री हुए। उसके बाद इन्द्रा गांधी हुईं उसके बाद उन के पुत्र राजीव गांधी प्रधान मंत्री रहे।

तारीखी सबक

चौदह वर्ष का इतिहास समाप्त हुआ। थोड़ी देर के लिए इसपूरी कहानी पर फिर एक नजर डालें और देखें कि चौदह वर्ष की यह कहानी क्या सबक देती है।

प्रारम्भ में बताया जा चुका है कि पहले सारे संसार में कैसा अन्धेरा छाया हुआ था फिर मक्का से एक सूर्य उदय हुआ जिसने देखते देखते सारे संसार को जगमगा दिया जब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सफा पहाड़ी पर खड़े होकर अल्लाह की पुकार सुनाई तो दुन्या हंसी और लोगों ने हंसी उड़ाई कि इस साहस को देखिये और इनको देखिये। इस फकीरी पर दुन्या के सुधार की इच्छा पागलपन नहीं तो और क्या है। लेकिन चन्द ही वर्षों में दुश्मनों के सिर झुके हुए थे और सारे संसारकदमों मे था। अरब के बद्दुओं ने कैसर और कसरा के सिंहासन उलट दिये और सारे संसार में इस्लाम का डंका बजने लगा। एक तरफ उन्नति और बुलन्दी की यह चरम सीमा दूसरी तरफ पतन शुरू हुआ तो आज कहीं सिर छुपाने की भी जगह नहीं मिलती। आइये जरा ठहर कर सोचें कि इस उत्थान और पतन का राज क्या है।

वास्तविकता यह है कि बिना किसी अच्छे और उच्च विचार के इंसान केवल जरा जरा सी बातों में उलझ कर रह जाता है। यही हाल अरब का भी था लेकिन इस्लाम ने बताया कि आदमी और जानवर में अन्तर है। खाते पीते तो जानवर भी हैं फिर आदमी भी केवल इसी का हो जाये तो उस में और जानवर में क्या अन्तर रहा। अब तक लोग यही समझते थे कि यही जिन्दगी सब कुछ है। इसके बाद न कहीं हिसाब है न किताब न अजाब है न सवाब न जन्नत है न दोज़ख़ इनसानों की यही वह सबसे बड़ी गलती थी जिसने उन्हें सदियों गुमराह रखा और उनका जीवन जानवरों से भी बदतर कर दिया। वहचोरी करते डाका डालते, लोगों की जान लेते और जो कुछ भी उनके जी में आता करते रहते थे लेकिन कभी दिल में खटक भी होती और होती भी क्यों वह तो आखिरत (प्रलोक) के क़ायल ही न थे, उन्हें डर न तो जब होता जब वह यह समझते कि इस चार दिन की जिन्दगी के बाद एक दूसरे संसार में जाना है और एक ऐसे हाकिम के सामने भलाई बुराई और नेकी बदी कारा ज़रा सा हिसाब देना है जिनके सामने न रिश्वत चल सकती है न सिफारिश काम दे सकती है न कोई चीज छुप सकती है छुपा खुला सब उनके सामने है वहां हर चीज का पूरा पूरा हिसाब होगा। फिर या तो अराम व चैन की जिन्दगी शुरू होगी या हमेशा हमेशा आग में जलना और कष्ट उठाना होगा। इस्लाम ने सफाई से कहा है कि दुन्या की जिन्दगी को एक खेल तमाशा समझो। जहां आंख बन्द हुई यह कहानी खत्म। उसने कहा यह कितनी बड़ी मूर्खता है कि हम इस चार दिन की जिन्दगी पर इतना फूल जाएं कि अपनी असली जिन्दगी को खराब करलें।

इस्लाम ने कुछ इस तरह यह बातें बताईं सुनाई कि एक एक शब्द दिल में उतर गया और अल्लाह का ध्यान और प्रलोक का ख्याल दिमाग में ऐसा रचा कि आनन फानन बदी और बदकारी की आदतें छूट गयीं और लोग शैतान का साथ छोड़कर फरिश्तों की सफ (पंक्ति) में आ बैठे। अब न दुन्या की उनके निकट कोई कद्र थी न उस

की जिन्दगी की कोई कीमत। अल्लाह की प्रसन्नता उनका उद्देश्य और प्रलोक की चाहत उनकी ग़रज थी। जिन्दा रहते तो इसलिए कि अल्लाह का कलमा बुलन्द हो और जान देते तो दम उसी के नाम पर निकलता। ईमान और आस्था की इस तब्दीली ने जिन्दगी का रूख बदल दिया और दम के दम में वह अपमान के गड्ढे से निकल कर मान सम्मान के तख्त पर जा बैठे। पहले जिनके सामने उनके सिर झुकते थे अब वही उन के पीछे हाथ बान्धे फिर रहे थे।

इस्लाम के शुरू का इतिहास पढ़ लीजिये। हमें कदम कदम पर ईमान, विश्वास की यही शन नजर आयेगी और मालूम होगा कि इसी के जोर में मुसलमान बढ़े जा रहे है। लेकिन बाद में ईमान में फिर कमजोरी आने लगी। अल्लाह का ध्यान कम हुआ और प्रलोक की जगह संसार का प्रेम बढ़ा। शासन व सल्तनत की लालच और धन दौलत की चाह ने अक्ल को अन्धा और दिल को काला कर दिया और बात बात पर झगड़े फसाद होने लगे, नतीजा यह हुआ कि सल्तनत सेकड़ों हुकूमतों में बंट गई और एक कौम के हजारों फिरके हो गये।

हजरत उसमान रजि० की शहादत से यह उपद्रव शुरू हुआ और आज तक काईम है। कहीं सरदारों से बगावत है कहीं शासकों के खिलाफ अन्दोलन है, कही लीडरों पर ताने है। नतीजा यह हुआ कि कौम टुकड़े टुकड़े हो गई है और घर घर फसाद हो रहा है। यह दोनों नमूने सामने है। इस्लाम के जोर ने मुट्ठी भर आदमियों को सारी दुनिया पर विजय दिलायी और दम के दम में अरब के बदू कैसर और कसरा के तख्त पर जा बैठे और अब यह भी सामने है कि ईमान की कमजोरी से करोड़ों की कौम अपमानित और जलील है आईये इतिहास की इस रोशनी में हम अपने ईमान को मजबूत कर लें और एक बार फिर दुन्या के अन्धेरे में उजाला कर दें। हिरासां और गमगीन मत हो, अगर ईमान वाले हो तो सर बुलन्दी तुम्हारे लिये है। (पवित्र कुरान)

अुनवाद – हबीबुल्लाह आजमी

(पृष्ठ १४ का शेष)

का अधिकार इस्लाम देता है। इसी संबंध में विरोधियों को सन्तुष्ट करने के लिए कुछ दिनों पहले किलिन्टन, जान कनेडी और चीनी नेताओं के अवैद्ध शारीरिक संबंधों और ऐसे नाजाएज सिलसिलों के कारण समाज में फैलने वाली बुराइयों तथा परेशानियों से संसार पूरी तरह अवगत है। चुनानचिः इंग्लिस्तान के मशहूर विचारक थामस ऑरनाल्ड ने इस्लाम की तेजी से फैलने पर विचार व्यक्त करते हुए लिखा था कि इस्लाम के खिलाफ बहुत कुछ कहा गया है लेकिन यदि न्याय के दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह संसार का एक मात्र धर्म है जो मानव जाति के लिए स्वीकारीय है। (काबिले कुबूल है) इस्लाम की सच्चाई और लाभदायकता का इस से बढ़कर और कौन सा सबूत हो सकता है कि जिस धर्म के प्रारम्भ में मक्का के चन्द बेसाहारा लोगों ने इसे स्वीकार किया था, वह किसी खास कोशिश के बिना हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम की जिन्दगी ही में सारी दुन्या में फैल गया और केवल अपनी रूहानी (अध्यात्मिक) ताकत के आधार पर संसार की उन तमाम हुकूमतों की बुनियाद को हिला डाला जो इस्लाम को मिटा देना चाहती थीं। ऑरनल्ड ने जिन हुकूमतों की तरफ संकेत किया है वह रूमी और ईरानी सल्तनत जो इस्लाम के उदय के समय वही हैसियत रखती थीं जो इस समय अमेरिका और ब्रिटेन की है। दोनों हुकूमतें साम्राज्यवाद (शंहशाहियत) पर आधारित होने के कारण इस्लाम के लोक तांत्रिक आन्दोलन के खिलाफ लामबन्द हो गयीं लेकिन इस्लाम ने हक्कानियत (सत्यता) की बुनियाद पर दोनों सल्तनतों को जड़ बुनियाद से उखाड़ फेंका। संक्षेप में इस्लाम मानव जाति के लिए बेहतरीन सामाजिक व्यवस्था और सुधारवादी संविधान (दस्तूर) है। इसमें इंसानी हमदर्दी आपसी मेलमिलाप, सत्य कर्मकाण्ड (सदाकत शिआरी) उदारवादी वादों की पाबन्दी और पवित्र जीवन को इख्तियार करने की सख्त ताकीद की गई। अुनवाद – हबीबुल्लाह आजमी

(आग से साभार)

अखलाक व औसाफे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

हजरत मौलाना अली मियां(रह०) की किताब "नबीये रहमत" का एक बाब अलग से छापा गया ताकि लोग आसानी से खरीद सकें और आसानी से पढ़ भी सकें इस अस्सी सफहात की किताब की कीमत सिर्फ १० रूपया है।

क्रिश्चन भाइयों के नाम एक पैगाम (उर्दू)

मौलाना अब्दुल करीम पारीख के कलम से लिखी हुई यह किताब ऐसे इलाकों के लिए बहुत जरूरी है जहां किश्चन हमारे भाइयों को वरग़ला रहे हो। ७४ सफहात की इस किताब की कीमत ७५ रूपया है।

मिलने का पता :

शोब–ए–दावत व इरशाद

पो० बा० ६३ नदवा, लखनऊ – २२६००७

कन्या भ्रूण हत्या पर भारत के सभी धर्मों के जिम्मेदार तथा महिला संघटनों और भारत सरकार के नाम एक अपील

अब्दुल करीम पारेख

हमारे देश में इन्सानियत, अहिंसा और दया धर्म का एक प्राचीन इतिहास रहा है। लेकिन समाज में जाने अनजाने में कई अपराध ऐसे हो रहे हैं जिनकी वजह से आए दिन सुनामी, भुकंप, विस्फोट, दंगा फसाद, बदअमनी ऐसी कोई ना कोई आकशीय अजाब (विपत्ती) से हमे दो चार होना पड़ता है, लेकिन फिर भी हम इन अपराधों पर ध्यान देकर रोकने के बजाए और ज्यादा बेफिक्र होते चले जा रहे हैं, आकाशीय किताबों में बताया गया है।

अनुवाद :– "धरती और दर्या में जब भी फसाद फैलता है इन्सानों के काले करतूतों के सबब कि उनको अपने बुरे कामों का कुछ मजा यहां भी चखा दिया जाए ताकि यह लोग अपनी हरकतों से रूक जाऐं।" (पवित्र कुर्आन ३०/४१) एक जगह यह भी बताया गया कि अनुवाद :– "और तुमपर जो भी मुसीबत आती है वह तुम्हारे हाथों के किए हुए कामों की वजह से आती है जबकि बहुत से गुनाह तो वह माफ कर देता है।" (पवित्र कुर्आन ४२/३०)

ऊपर दर्ज आयतों से यह बात साबित हो जाती है कि जितनी भी विपत्तीयां आज हम पर आए दिन आती रहती है उसके जिम्मेदार हम खुद ही है यह हमारे ही गुनाहों की सजा है, हमारे मालिक का हम पर बहोत बड़ा एहसान है कि उसने हमको आकाशी किताबों के द्वारा हमें आगाह कर दिया, जिसे पढ़कर हम अपने गुनाहों, पापो को रोक सकते है। दुनिया में आज बहोत से पाप हो रहें हैं, इस लेख के द्वारा मैं एक बहोत बड़े गुनाह की तरफ आप सब देशवासियों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं वह यह कि आज पूरी दुनिया में विज्ञान का सहारा लेकर कन्या भ्रूण हत्या जबरदस्त गुनाह इन्सानियत से हो रहा है, बेगुनाह और मासूम बच्चियां डॉक्टरों की मदद से मां के पेट में दुनिया में आने से पहले मार दी जाती है, इस घोर पाप में मां बाप सहित दूसरे रिश्तेदार भी शामिल रहते हैं। इस गुनाह में कई शरीफ घरानों के हाथ भी उन मासूम बच्चीयों के खून से रंगे हैं, आज दुनिया में बेटी को बोझ समझा जाता है। बेटी की खबर मिलते ही मां बाप और रिश्तेदारों के चेहरे फीके पड़ जाते है। इसी संदर्भ में पवित्र कुर्आन में बताया गया है।

अनुवादः– " जब उनमें से किसी के यहां लड़की पैदा होने की खबर दी जाती है तो उसका चेहरा काला पड़ जाता है और गम के मारे अंदर ही अंदर घुलता रहता है। इस खबर को बुरी समझकर मारे शर्म के कौम से मुंह छुपाता फिरता है (कि आज तो उसे बहोत ही बुरी खबर मिली है बड़ी उलझन में पड़ जाता है कि क्या करे क्या न करे) या तो इस बेटी की जिल्लत उठाकर पाले या फिर मिट्टी में जिन्दा गाढ़ दे, आगाह हो जाओं कि यह लोग बड़ा बुरा फैसला करते हैं।

(पवित्र कुर्आन १६/५८–५९)

बड़े दुख दर्द के साथ आपको एक सूचना देता हूं जिससे आप अन्जान नहीं है कि जनवरी २००७ के समाचार पत्रों में एक दुःखद घटना का समाचार छपा है कि मध्यप्रदेश के इलाके में एक बेगुनाह नवजात बालिका के गले पर चार पाई कापाया रखकर हत्या कर दी गई। हमारी भारतीय बहन को लड़के की बजाए लड़की पैदा हुई वह बच्ची को लेकर कहीं छुप गयी क्योंकि उसे डर था उसके रिश्तेदार अबोध बालिका की हत्या कर देंगे और ऐसा ही हुआ उसके रिश्तेदारों ने उस छुपी औरत को ढूंढ कर उसके हाथ से नवजात, बेगुनाह बालिका को छीनकर खटियों के पाए से गला दबाकर हत्या कर दी। इस समाचार के पढ़ने के बाद सभी धर्मों के धर्मगुरू, शंकराचार्य, सभी मौलाना लोग, सभी ईसाई रहनुमा, सभी महिला संगठन, सभी राज्य सरकारें और भारत सरकार अगर अब भी जागते नहीं है और पिछले कई सालों से चल रहे नारी हत्या के इस जुर्म पर कोई कठोर कदम ना उठाया गया तो वह दिन दूर नहीं कि पुरूषों की संख्या के मुकाबले में स्त्रीयों की संख्या ५० प्रतिशत भी नहीं रह जायेगी, और इसकी शुरूआत भी हो चुकी है।

एक समय केवल देहली में ससुराल वालों की मांग के अनुसार दहेज न लाने पर एक माह में १६

दुल्हनें जिन्दा जलाई जाती थी। तथा विज्ञान की तरक्की का इस्तेमाल करके महिला पेट में बालक है या बालिका यह मालूम करके प्रसव के पहले ही डॉक्टर्स की मदद से उस बालिका की हत्या कर दी जाती थी। और मां बाप और रिश्तेदारों की रजामंदी से यह घिनौना पाप आज भी हो रहा है। बेटियों पर ऐसे जुल्म समाज किस प्रकार बर्दाश्त कर रहा है।

मेरे धर्मगुरू जगविख्यात हजरत मोलाना अली मियां साहब ने मुझे तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री नरसिंहराव जी के लिए एक सन्देश लेकर भेजा था, मेरे सम्मानीय दोस्त तत्कालीन रेलवे मंत्री जनाब जाफर शरीफ साहब के माध्यम से प्रधानमंत्री जी से मेरी मुलाकात हुई, मैंने इस समस्या पर श्री राव साहब से विस्तृत चर्चा की, मैंने कहा कि मैं कुर्आन का एक विद्यार्थी हूं और सन्सार के सभी प्रमुख धर्मग्रन्थों का मैंने अध्ययन भी किया है, नर नारी का दुनिया में आने का क्रम इस संसार के मालिक के हाथ में है, किसे नर बनाना है, किसे नारी बनाना है यह हमारे मालिक के हाथ में है, यह बात हमें आकाश पुस्तकों से मालूम होती है।

अनुवाद :– "एक ही विग्र बिन्दू से नारी के पेट में प्रभू ने इन्सान की पैदाइश का क्रम रखा है।"

(पवित्र कुरान ७५/३६)

मैनें श्री राव साहब से जोर देकर कहा कि हुकूमत को सख्त कदम उठाना पड़ेगा वर्ना इस मुल्क पर आकाशीय विपत्तीयां आ सकती है, सन्सार का मालिक अगर रूठ गया और इस अपराध पर उसने आकाशीय विपत्तीयां भेजी तो भारत की धरती कपकपा जाएगी। उन्होंने मेरी बात को बहुत ध्यान से सुना और कहा कि मौलाना हम जो कुछ कर सकेंगे करेंगे।

मैने कहा कि आज से दो हजार साल पहले अगर एक लड़की पैदा होती तो उसे बर्दाश्त कर लिया जात था लेकिन दूसरी लड़की होने पर उसे जिन्दा दफना दिया जाता था, बाप को बेटी से प्यार भी होता है, यह कुदरत की दी हुई मोहब्बत का असर है लेकिन अंदर ही अंदर सामाजिक बिगाड़ बाप को डराता है कि बड़ी होने पर इसकी शादी करनी पड़ेगी दहेज देना होगा, न देने पर सुसराल वाले उसे तकलीफ देंगे, बेचेंगे तलाक देंगे, या मार देंगे, यह सब डर उसे सताता था, इतिहास का एक किस्सा आज भी सुनने में आता है कि एक बाप अपनी बेटी को प्यार से सजा संवार कर, अच्छे कपड़े पहनाकर तैयार किया, बेटी बहुत खुश थी, बाप शैतान के बहकावे में गैरइन्सानी हरकत का सहारा लेकर जमीन में जिन्दा बेटी की कब्र खोद रहा था, कुछ मिट्टी बाप के चेहरे पर लगने पर बेटी अपने पल्लू से बड़े प्यार से बाप के चेहरे पर लगी मिट्टी को साफ करती है उसे मालूम नहीं था कि उसका बाप जिन्दा कब्र में दफन करने की तैयारी कर रहा है, पवित्र कुर्आन ने ऐसे जुर्म पर नोटिस लिया कि अनुवाद : "जब जिन्दा गाड़ी हुई लड़की से इंसाफ के दिन पूछा जाएगा कि उसे किस जुर्म में जिन्दा दफन किया गया था। (पवित्र कुर्आन ८१/८–९)

मौजूदा सरकार से बड़े अदब से अपील करता हूं उनको मालिक ने सत्ता दी है इसलिए उनका यह कर्तव्य बनता है कि वह इस घिनौनी और गैरइन्सानी हरकत पर सख्ती से लगाम लगाए क्योंकि उनसे भी ईश्वर जवाब तलब करेगा कि तुम्हें सत्ता और ताकत दी थी तो तुमने उसका इस्तेमाल क्यों नहीं किया ? सत्ताधारी लोग खुद अपना आकलन कर लें कि क्या वह इस पर जवाब देने की स्तिथी में हैं ? हमें यह बात सदा याद रखना चाहिए कि हम जिस धरती पर जी रहें हैं वह जमीन हमारी नहीं हैं, भूमि ईश्वर की हे, हम इस धरती के मालिक नहीं है बल्कि ट्रस्टी हैं और ट्रस्टियों से हिसाब लिया जाना दुनिया का दस्तूर है। अबोध बेगुनाह कन्याओं की हत्याओं को ईश्वर बर्दाश्त नहीं करेगा और कुदरत का कोप हमें धरती पर सुख से जीने नहीं देगा इस पर विचार करके तुरंत कदम उठाया जाना अत्यंत जरूरी है।

सरकार इस काम में सभी धर्मों के जिम्मेदारों को एक मंच पर लाकर विचार विमर्श करे और उनसे भी यह अपील करे कि अपने प्रवचनों में वह समाज को इस घोर अपराध को रोकने के लिए जागरूक करें और उन्हें इस पाप की सजा, यातना से परिचित कराऐं। अगर हम यह नहीं करेंगे तो कन्याओं की हत्याओं से इस जमाने के इतिहास के पन्ने भरते रहेंगे और आने वाली पीढ़ी हमारे इस अपराध पर हमें कन्या हत्यारों के नाम से याद करेगी।

अभी कुछ दिनपहले भारत सरकार की महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती रेणुका चौधरी जी का बयान आया कि "अपनी बेटी को मत मारिये सरकार उसका पालन पोषण करेगी, इसको अमल में लाने के लिए सरकार

(शेष पृष्ठ ७ पर)

इस्लाम, मुसलमान और उनकी उसूल पसन्दी

डॉ० शराफत हुसैन

समय के मौजूदा मोड़ पर दुन्या भर के मुसलमानों को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है उनमें यकीनी तौर पर सबसे अधिक परेशान करने वाली शान्ति की समस्या है जो कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी न किसी रूप में हमेशा मौजूद रहती है लेकिन वर्तमान में मुसलमान आम तौर पर चारो तरफ से निशाने पर हैं। यही कारण है कि आम तौर से दूसरे धर्मों के लोगों ने "अकीदः इस्लाम" (इस्लामी आस्था) को भी अपना निशाना बनाया है। इस लेख में संक्षिप्त रूप से इस्लाम की एक सही रूपरेखा बयान की गयी है। एच०जी० वेल्स ने लिखा है कि "इन लोगों (मुसलमानों) ने एक ऐसे समाज को जन्म दिया जो जुल्म व अत्याचार, भेदभाव और समाजी घुटन से पाक व साफ हैं। इससे पहले कोई ऐसा समाज संसार में नहीं था। **(Out Line of History-P 325)**

मिसाल के तौर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने आखिरी खुतबे (अंतिम व्याख्यान) में कहा था "आप सब लोग भाई भाई हैं एक दूसरे के बराबर हैं। कोई भी तुम में एक दूसरे पर श्रेष्टा (फजीलत) नहीं रखता। कोई भी एक दूसरे से बेहतर नहीं है। अर्थात अरब को गैर अरब पर प्रधान्ता नहीं दी जा सकती। इसी तरह अरब किसी गेर अरब से बेहतर नहीं है। कोई गोरे रंग का आदमी किसी दूसरे रंग व नस्ल के आदमी से श्रेष्ट नहीं है। इसी तरह किसी और नस्ल का आदमी गैरे रंगे के आदमी को अपने से नीचा नहीं कह सकता सिवाए इस के कि उसके कर्म दूसरे आदमी के कर्म से बेहतर हों (मसनद अहमद इब्ने हंबल) कुरआन करीम की विभिन्न आयतों में भी मूसलमानों को एक दूसरे की बुराई करने से बचने, दुर्भावना से दूर रहने , दूसरों के भेद न टटोलने, पीठ पीछे बुराई करने, एक दूसरे की खिल्ली न उड़ाने का आदेश ही न दिया गया है बल्कि उनकी मदद करने, पवित्र जीवन व्यतीत करने, दूसरों की भलाई का हुक्म देने और उन्हें बुराई से बचने की प्रेरणा (तरग़ीब) देने, दूसरों के धर्मों और उनके धार्मिक मार्ग दर्शकों को बुरा कहने और उनके दिल दुखाने से बचनरे का निर्देश दिया गये हैं। इसके अतिरिक्त समाज कल्याण हेतु शिक्षा हासिल करने के लिए तो विभिन्न तरीकों से पवित्र कुर्आन की सात सौ से अधिक आयतों में हुक्म दिया गया है।

निगलिसन–मिस्टिक आफ इस्लाम, वाडिया–माइरेज आफ मुहम्मद और मैकमाल्क–एथिक्स आफ इस्लाम की पुस्तकों को अध्ययन करने के बाद गांधी जी लिखते हैं कि यदि दिली एकता काइम करना चाहते हैं तो हमें सहनशीलता और क्षमा के सिलसिले में पैगम्बरे इस्लाम के पद चिन्हों (नक्शकदम) पर चलना पड़ेगा। एक दूसरे औसर पर गांधी जी ने कहा कि मैं जिन्दउगी भर मुसलमानों के साथ रहता आया हूं और सब से बड़ी शिक्षा मैंने इस्लाम से सीखी है। वह यह है कि यह मानवी भाई चार्गी और बराबरी की शिक्षा देता है। इसके अतिरिक्त यह कि समाज में अमन व शान्ति, सुलह व आशती रखने के लिए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने अमल से ऐसी मिसाल काइम की कि कुरैश लोगों के हर प्रकार के अतयाचार, कष्ट यहां तक कि समाजी बाई काट भी बर्दाश्त किया। और आखिरकार मारकाट से बचने के उद्देश्य से हिजरत (देश त्याग) फरमाई। हज करने की नीयत से जब पहली बार मदीना से मक्का तशीरफ ले गये और कुरैश ने उन्हें रोका तो उन्होंने सुलह हुदैबिया की शर्तों की सीमा में उभरा करके युद्ध से बचने के लिए मदीना वापस हो गये। बाद में जब मक्का के बहुत से लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया और मक्का पर विजय प्राप्त हुई तो तामम विरोधियों को माफ कर दिया। अर्थात उन्हों ने अपने अमल से उस समय की उनकी गलती को बताकर कुरैश को कायल किया। इसी को इस्लामी इन्कलाब का मील का पत्थर कहा जाता है। इस्लाम का अर्थ ही अमन व शान्ति है। और इसका उद्देश्य अमनों अमान और शान्ति स्थापना और सुरक्षा के अतिरिक्त कुछ और हो ही नहीं सकता।

इस्लाम के सूर्य उदय के समय

पूरे संसार में जंगल राज था। कोई शासन व्यवस्था न थी, कोई संविधान (दस्तूर) न था, नहीं कोई क़ानून था। शक्तिशाली व्यक्ति ही अधिनस्थ (मकबूज़:) इलाके का खुदा होता था। जिस इलाके पर जिसका कब्जा होता था उस का आदेश ही कानून होता था। यही काबिज आपस में युद्ध और कत्ल गारतगरी करते रहते थे। मशहूर है कि रूमियों ने अफरीकियों पर विजय पाई तो उन्हें जानवरों की तरह जिबह कर डाला। मिस्रियों ने शाम पर कब्जा करने के बाद शामियों के खून से वहां की जमीन को लाल कर दिया। तातारी जब कहीं हमला करते थे तो फाड़ खाने वाले जानवरों को भी मात कर देते थे। ऐसे ही माहौल में इस्लाम ने उदय होकर मानवता और समानता, हमदर्दी और रवादारी को मकबूल उदार हृदयता व सहानभूति को प्रिय बनाया। हिंसा से मुक्त एक पवित्र बेहतरीन समाजी व्यवस्था पेश की। तब ही तो एक मशहूर फ्रांसीसी विचारक एडवर्ड मोंटी ने लिखा है कि इस्लाम का इतिहास इस हकीकत का गवाह हे कि यह धर्म पक्षपात और संकीर्णता (तंग नजरी) से पाक है, और इस धर्म के मानने वाले हर युग में रवादारी, इंसान दोस्ती और मानव सभ्यता की उन्नति के दावत देने वाले रहे। इस्लाम ने अपनी शिक्षा को केवल उपासना और ध्यान और मौत के बाद जिन्दगी में इंसानों का बड़ी खूबी के साथ मार्ग दर्शन किया है। इसमें संसार त्याग की हिदायत नहीं की गयी है बल्कि पवित्र जीवन को प्रलोक की बेहतरीन पूंजी करार दिया गया है। वास्तव में इस्लाम एक ऐसी जीवनशैली है जिसमें मानव के सुधार का सीधा रास्ता दिखाया गया है। और इन पेचीदा समस्याओं को हल किया गया है जो आमतौर पर हल न होने के योग्य समझी जाती हैं।

संक्षेप में इस्लाम ने अपने मान ने वलों को कुर्आन, हदीस की मुकम्मल जीवन शैली दी है जिसमें घरेलू और आर्थिक जीवन की कठिन समस्याओं को हल कर दिया गया है आज भी यह दावा सच है कि दुन्या में अमन व शान्ति स्थापित करने के लिए इस्लामी कानून का कोई बदल नहीं है। मस्लन समाज में शान्ति भंग करने का सबसे बड़ा कारण व्यर्थ रक्तपात (नाहक खूरेज़ी) है। यही वजह है कि आम तौर से समाज में इस सम्बन्ध में कठोर क़ानून लागू हैं। कुर्आन के अनुसार बिना अपराध के एक आदमी की हत्या पूरी मानवता की हत्या के बराबर है।

चुनानचि: कातिल का कत्ल आवश्यक है यद्यपि मक्तूल के वर्सा खूंबहा लेकर (उत्तराधिकारी अर्थदंड लेकर) या बिना उसके क्षमा कर सकते हैं। अशान्ति की दूसरी वजह बलात्कार है। कुर्आन का आदेश है शादी शुदा बलात्कारियों को पत्थर मार मार कर मार डालो ताकि हर आदमी इससे बचे। गैर शादी शुदा जोड़ों को सौ कोड़े लगाए जायें ताकि कौम की कुंवारी बेटी मां बनने से सुरक्षित रहे। समाज में पवित्रता बर्करार रहें। इसीलिए औरतों के लिए पर्दा जरूरी करार दिया गया है ताकि मर्द और औरत के दर्मियान संबंध काइम न होने पाये और औरतें पतिव्रता रहें तथा रिश्तों की पवित्रा बाकी रहे। इसी तरह इस्लाम में तलाक़ की व्यवस्था है कि चरित्र भ्रष्ट, बेशरम औरतों से मर्द को छुटकारा मिलने की आसानी हो और औरतें अपनी पवित्रता काइम रखने की पाबन्द रहें। बदचलन मर्द भी अपना आचरण सुधारने पर मजबूर हो कि औरत को ऐसे मर्द से आजादी का दावा करने (खुलाअ) की अनुमत है। इसके अतिरिक्त सदका, खैरात फितरा व्रत दान के कानून लागू करके इसलाम ने कमजोर, बीमार, बूढ़े और मजबूर के आत्म सम्मान को सुरक्षित रखने और भीख मांगने और अपराध से समाज को सुरक्षित रखने का जतन किया है। रोजा रखने को जरूरी करार देकर अमीरों को भूख, प्यास का एहसास दिला कर गरीबो, भूखों के लिए प्यार पैदा करता है। और रोजा स्वस्थ के लिए भी लाभंप्रद है। इस्लाम देखावा, वंश व खानदान की बड़ाई और शानोशौकत व गरूर को दूर करके प्रेम व समानता का जज्बा पैदा करने का दावेदार है। बिना भेदभाव नमाज़, हज में जमअीयत (समूह) का बोध कराता है। ऊँच नीच व पक्षपात को समाप्त करता है। मुस्लिम शासकों को गैर कौमों (ज़िम्मियों) को अपनी पूरी सभ्यता और धार्मिक आजादी का हक देने का आदेश है। अत्याचार के खिलाफ जिहाद के अन्तर्गत ही सहनशीलता व कुर्बानी का हथियार भी शामिल है। महात्मा गान्धी ने अंग्रेजों के खिलाफ अहिंसा और सत्याग्रह के प्रयोग करने के लिए हुसैन इब्ने अली रजि० के करबाला में जिहाद करने से शिक्षा ली थी।

इंसानी स्वभाव के अनुसार धनी मर्द को हर तरह इंसाफ बर्करार रखने की शर्त के साथ चार शादियों

(शेष पृष्ठ ११ पर)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

का दुश्मनों से प्यार

तुमने दुशमनों का प्यार करने का वअ़ज़ सुना होगा, लेकिन उसकी अ़मली मिसाल नहीं देखी होगी। आओ मदीने की सरकार में तुमको दिखाऊं, मक्के के हालात छोड़ता हूं कि मेरे नज़दीक महकूमी, बे कसी और मजबूरी अ़फ़्व, दरगुज़र और रह्म के हम मअ़ना नहीं है। हिजरत के वक़्त कुरैश के रईस यह इश्तिहार देते हैं कि जो मुहम्मद (स०) का सर क़लम कर के लाएगा उसको सौ ऊँट इनआ़म दिये जायेंगे। सुराक़ा बिन जअ़शम इस इनआ़म के लालच में मुसल्लह होकर आपके तआ़कुब (पीछा करने) में घोड़ा डालता है, क़रीब पहुचं जाता है। हज़रत अबू बक्र घबरा जाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुआ़ करते हैं, तीन दफ़अ़ घोड़े के पावं धंस जाते है। सुराक़ा तीर के पांसे निकाल कर फ़ाल देखता है, हर दफ़अ़ जवाब आता है इनका पीछा मत करो नफ़्सी (यअ़्नी साइकोलीजकली) हैसियत से सुराक़ा मर्उ़ब हो चुकता है, वापसी का अ़ज़्म कर लेता है, हुज़ूर को आवाज़ देता है, और ख़त्ते अमान की दरख़्वास्त करता है कि जब हुज़ूर को खुदा कुरैश पर ग़ालिब करे तो मुझ से बाज़ पुर्स न हो। आप (स०) यह अमान नामा लिखकर उसके हवाले करते हैं फ़त्हे मक्का के बअ़्द वह इस्लाम लाता है ताहम आप उससे यह नहीं पूछते कि सुराक़ा तुम्हारे उस दिन के जुर्म की ज़ा हो?

अबू सुफ़्यान कौन है? वह जो बद्र उहुद खन्दक़ वग़ैरह लड़ाइयों का सरग़ना था जिसने कितने मुसलमानों को तहे तेग़ कराया जिसने कितनी मरतबा खुद हुज़ूर सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के क़त्ल का फ़ैसला किया जो हर क़दम पर इस्लाम का सख़्त तरीन दुशमन साबित हुआ, लेकिन फ़त्हे मक्का से पहले जब हज़रत अ़ब्बास (रज़ि०) के साथ आप स० के सामने आता है तो उस का हर जुर्म उसके कत्ल का मशवरा देता है, मगर रहमते आ़लम का अ़फ़्वे आ़म अबू सुफ़यान से कहता हे कि डर का मक़ाम नहीं मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इन्तिक़ाम के जज़बे से बाला तर हैं। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) उनको मुआ़फ़ फरमाते हैं बल्कि यह भी फ़रमाते हैं "मन दख़ल दार अबी सुफ़यान कान आमिनन" (जो अबू सुफ़यान के घर में पनाह लेगा उसको भी अमान है।)

हिन्द अबू सुफ़यान की बीवी वह हिन्द जो उहुद के मअ़रके में अपनी सहेलियों के साथ गा गा कर कुरैश के सिपाहियों के दिल बढ़ाती हैं, वह जो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के सबसे महबूब चचा और इस्लाम के हीरो हज़रत हमज़ा रज़ि० की लाश के साथ बेअदबी करती है उनके सीने को चाक करती है। उनके कान नाक काट कर हार बनाती है, कलेजा निकाल अ़ल्लामा सय्यिद सुलैमान नदवी कर चबाना चाहती है, लड़ाई के बअ़्द इस मंज़र को देखकर आप स० बेताब हो जाते हैं। वह फ़त्हे मक्का के दिन नक़ाब पोश सामने आती है और यहां भी गुस्ताख़ी से बाज़ नहीं आती लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फिर भी कुछ तअ़र्रुज़ नहीं फ़रमाते हैं और यह भी नहीं पूछते कि तुम ने यह क्यों किया अ़फ़्वे आ़म की इस मुअ़जिज़ाना मिसाल को देखकर वह पुकार उठती है : "ऐ मुहम्मद स० आज से पहले तुम्हारे ख़ेमे से ज़ियादा किसी खेमे से मुझे नफ़रत न थी लेकिन अब तुम्हारे ख़ेमे से ज़ियादा किसी का ख़ेमा मुझे महबूब नहीं।

वहशी हज़रते हमज़ा का क़ातिल फ़त्हे ताइफ़ के बअ़्द भाग कर कहीं चला जाता है और जब वह मक़ाम भी फ़त्ह हो जाता है तो कोई दूसरी जाए पनाह नहीं मिलती , लोग कहते है वहशी! तुनमे अभी मुहम्मद स० को पहचाना नही, तुम्हारे लिये ख़ुद मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के आस्ताने से बढ़कर कोई दूसरी जाए अम्न नहीं है। वहशी हाज़िर हो जाता है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम देखते हैं आखें नीची कर लेते हैं, प्यारे चचा की शहादत का मंज़र सामने आ जाता है आंखे अश्कबार हो जाती है, क़ातिल सामने मौजूद है, मगर सिर्फ़ यह इर्शाद होता है कि वहशी जाओं मेरे सामने न आया करो कि शहीद चचा की याद ताज़ा हो जाती हैं।

अकरमा (रज़ि०) इस्लाम मुसलमानों और ख़ुद मुहम्मद रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सबसे बड़े दुश्मन अबू जहल के बेटे थे, जिसने आप स० को सबसे ज़ियादा तक्लीफ़ें पहुचाई, वह ख़ुद भी ईस्लाम के ख़िलाफ़ लड़ाईयां लड़ चुके थे, मक्का जब फत्ह हुआ तो उन को अपने और अपने ख़ान्दान के तमाम जुर्म याद थे वह भाग कर यमन चले गये, उनकी बीवी मुसलमान हो चुकी थीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को पहचान चुकी थीं वह ख़ुद यमन गयीं, अकरमा को तस्कीन दी और उनको लेकर मदीना आई। हुज़ूर रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को उनकी आमद की ख़बर होती है तो उनके ख़ैर मक़्दम के लिए इस तेज़ी से उठते है कि जिस्में मुबारक पर चादर तक नहीं रहती फिर जोशे मसर्रत में फ़रमाते है : मर्हबम्बि र्राकिबिल मुहाजिर" ऐ मुहाजिर सवार तुम्हारा आना मुबारक, गौर करो, यह मुबारक बाद किस को दी जा रही है? यह ख़ुशी किस के आने पर है? यह मुआ़फ़ी नामा किस को अ़ता हो रहा है? उसको जिस के बाप ने आप को मक्के में सबसे ज़ियादा तक्लीफ़ें पहुंचाई जिसने आप स० के जिस्में मुबारक पर नजासत डलवाई, जिसने ब हालते नमाज़ आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के गले में चादर डालकर आप को फांसी देनी चाही, जिसने दारूननदवा में आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के क़त्ल का मश्वरा दिया। जिसने बद्र का मअ़रका बरपा किया और हर किस्म की सुल्ह की तदबीर को बरहम किया आज उसी की जिस्मानी यादगार की आमद पर यह मसर्रत और शादमानी है।

हिबार बिन अल अस्वद वह शख़्स है जो एक हैसीयत से हज़रत स० की साहिबज़ादी हज़रते ज़ैनब का क़ातिल है कई शरारतों का मुर्तकिब हो चुका है मक्के की फ़त्ह के मौक़िअ़ पर उस का खून हद्र (क़त्ल जाइज) किया जाता है, वह चाहता है कि भाग कर ईरान चला जाए लेकिन फिर सोच कर सीधा दरे दौलत पर हाज़िर होता है और कहता है, "या रसुलल्लाहु (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) मैं भाग कर ईरान चला जाना चाहता था, लेकिन फिर मुझे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का रहम व करम और अ़फ़्व व हिल्म याद आया, मैं हाज़िर हूं, मेरे जराइम की जो इत्तिलाअ़ें आप को मिली हैं वह सब दुरूस्त हैं, इतना सुनते ही आप की रहमत का दरवाज़ा खुल जाता है और दोस्त व दुशमन की तमीज़ उठ जाती है और मुआ़फ़ कर दिया जाता है।

उमैर बिन वहब बद्र के बअ़द एक क़ुरैशी रईस की साज़िश से अपनी तलवार ज़हर में बुझा कर मदीने आता है और इस ताक में रहता है कि मौक़अ़ पाकर (नउज़ु बिल्लाह) आप का काम तमाम कर दे कि नागाह वह गिरिफ़्तार हो जाता है, आप के पास लाया जाता है, उस का गुनाह साबित हो जाता है। मगर वह रिहा कर दिया जाता है।

सफ़्वान बिन उमय्या यअ़नी वह रईस जिस ने उमैर को आप के क़त्ल के लिये भेजा था और जिसने उमैर से वअ़्दा किया था कि अगर तुम इस मुहिम में मारे गये तो तुम्हारे अहल व अ़याल और कर्ज़ का मैं ज़िम्मेदार हूं, फ़त्हे मक्का के बअ़द वह डर कर जद्दा भाग जाता है कि समन्दर के रास्ते से यमन चला जाए। वहीं उमैर ख़िदमते नबवी में आकर अ़र्ज़ करते हैं कि या रसूलल्लाह! सफ़्वान अपने क़बीले का रईस डर की वजह से भाग गया है कि अपने को समन्दर में डाल दे, इरशाद होता है "उस को अमान है।" उमैर दोबारा गुज़ारिश करते हैं कि इस अमान की कोई निशानी मरहमत हो कि उसको यक़ीन आए, आप अपना अ़मामा उठाकर दे देते है, उमैर यह अ़मामा लेकर सफ़्वान के पास पहुंचते है, सफ़ावान कहता है मुझे मुहम्मद स० के पास जाने में अपनी जान का ख़ौफ़ है, वह उमैर जो ज़हर में तलवार बुझा कर मुहम्मद (रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को मारने गये थे सफ़्वान से कहते हैं, अभी तुम को मुहम्मद (रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के हिल्म व अ़फ़्व का हाल मअ़्लूम नहीं है। सफ़्वान आस्तान–ए–नबवी पर हाज़िर होता है और कहता है कि मुझसे कहा गया है कि तुम ने मुझे अमान दी है, क्या यह सच है ? इरशाद होता है, "सच है" फिर कहता है लेकिन मैं तुम्हारा दीन अभी क़ुबूल नहीं करूंगा मुझे दो महीने की मुहलत दो, आप फ़रमाते हैं, तुम्हें दो नहीं चार महीने की मुहल्लत है, लेकिन यह मुहलत ख़त्म भी नहीं हो पाती कि दफ़अ़तन उसके दिल की कैफ़ीयत बदल जाती है और वह मुसलमान हो जाता है।

आप ख़ैबर जाते हैं जो यहूदी क़ुव्वत का संबसे बड़ा मरकज़ है लड़ाइयां होती हैं शहर फ़त्ह होता हैं, एक यहूदीया दअ़्वत करती है, आप स० बिला पस व पेश मंज़ूर फ़रमाते है

यहूदिया जो गोश्त पेश करती है उसमें ज़हर मिला होता है, आप गोश्त का टुकड़ा मुंह में रखते हैं आप को इत्तिलाअ़ हो जाती है यहूदीया बुलाई जाती है, वह अपने क़ुसूर का एअ़तिराफ़ करती है लेकिन रहमते आ़लम (रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के दरबार से उसको कोई सज़ा नहीं मिलती, हालांकि उस ज़हर का असर आप को उसके बअ़द उम्र भर महसूस होता रहा।

ग़ज़व–ए–नज्द से वापसी के वक्त आप तन्हा एक दरख़्त के नीचे आराम फ़रमा रहे है दोपहर का वक़्त है, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की तलवार दरख़्त से लटक रही है, सहाबा इधर उधर दरख़्तों के साये में लेटे हैं, कोई पास नहीं है। एक बदू ताक में रहता है वह उस वक़्त सीधा आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के पास आता है दरख़्त से आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की तलवार उतारता है फिर नियाम से बाहर खींचता है कि आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की आंख खुल जाती है, वह तलवार हिलाकर पूछता है "मुहम्मद बताओ अब कौन तुमको मुझ से बचा सकता है?" एक पुर इतमीनान सदा आती है, "अल्लाह" इस ग़ैर मुतवक्किअ़ जवाब को सुन कर वह मरऊ़ब हो जाता है, तलवार नियाम में कर लेता है, सहाबा आ जाते है बदू बैठ जाता है और आप उससे कोई तअ़र्रुज़ नहीं फ़रमाते है।

एक दफ़अ़ एक काफ़िर गिरिफ़्तार होकर आता है कि यह क़त्ल के लिए आप की घात में था वह सामने पहुंचता है तो आप को देख कर डर जाता है, आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) उसको तसल्ली देते है और फ़रमाते हैं कि अगर तुम क़त्ल करना चाहते तब भी नहीं कर सकते थे, ग़ज़ब–ए–मक्का में अस्सी आदमियों का दस्ता गिरिफ़्तार हुआ जो जबले तनईम से उतर कर आप को क़त्ल करना चाहता था आप को खबर हुई तो फ़रमाया इन को छोड़ दो।

दोस्तो ताइफ़ को जानते हो, वह ताइफ़ जिस ने मक्का के अहदे सितम में आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को पनाह नहीं दी, जिसने आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की बात भी सुननी नहीं चाही, जहां के रईस इब्ने अ़बद या लैल के खानदान ने आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से इस्तिहज़ा किया, बाज़ारियों को इशारा किया कि वह आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की हंसी उड़ाएं, शहर के औबाश हर तरफ से टूट पड़े और दो रोया खड़े हो गये और जब आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) बीच से गुज़रे तो दोनो तरफ़ से पत्थर बरसाए यहां तक कि पाए मुबारक ज़ख्मी हो गये, दोनों जूतियां खून से भर गईं जब आप थक कर बैठ जाते तो यह शरीर आप का बाज़ू पकड़ कर उठा देते जब आप चलने लगते तो फिर आप पर पत्थर बरसाते। आँ हज़रत को उस दिन इस क़दर तक्लीफ़ पहुंची थी कि नौ बरस के बअ़द जब हज़रत आइशा ने एक दिन दरयाफ़्त किया कि या रसूलुल्लाह तमाम उम्र में आप पर सबसे ज़ियादा सख़्त दिन कौन आया ? तो आप स० ने इसी ताइफ़ का हवाला दिया। सन ८ हिजरी में मुसलमानों की फ़ौज इसी ताइफ़ का मुहासूरा करती है, एक मुद्दत तक मुहासरा जारी रहता है, क़िलअ़ नहीं फ़त्ह होता है, बहुत से मुसलमान शहीद होते है आप वापसी का इरादा करते है, पुर जोश मुसलमान नहीं मानते हैं ताइफ़ पर बद दुआ करने की दरख़्वास्त करते हैं, आप हाथ उठाते है मगर क्या फ़रमाते है ? "ख़ुदावन्दा ! ताईफ़ को हिदायत कर और इसको इस्लाम के अस्ताने पर झुका "दोस्तो ! यह किस शहर के हक़ में दुआए ख़ैर है ? वही शहर जिसने आप पर पत्थर बरसाए थे आप को ज़ख्मी किया था।

उहुद के ग़ज़वे में दुशमन हम्ला करते है, मुसलमानों के पांव उखड़ जाते हैं आप नर्ग़–ए–अअ़दा में होते है, आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर पत्थर तीर और तलवार के वार हो रहे हैं, दन्दाने मुबारक शहीद होता है, खौद की कड़यां सरे मुबारक में गड़ जाती है, चेहर–ए–मुबारक खून से रंगीन होता है इस हालत में भी आप की ज़ुबान पर यह अलफ़ाज़ आते हैं वह क़ौम कैसे नजात पाएगी जो अपने पैग़म्बर के क़त्ल के दरपै है, ख़ुदावन्दा! तू मेरी क़ौम को हिदायत कर वह जानती नहीं है।" यह है तू अपने दुशमन को प्यार कर" के ज़ैतूनी वअ़ज़ पर अमल जो सिर्फ़ शाअ़िराना फ़िक्रा नहीं बल्कि अमल का ख़तरनाक नमूना है।

वही इब्नि अ़ब्द या लैल जिस के खान्दान ने ताइफ़ में आप स० के साथ यह मज़ालिम किये थे जब ताइफ़ का वफ़्द लेकर मदीना आता है तो आँ हज़रत उसको अपनी मस्जिद में खेमा गाड़ कर उतारते हैं, हर रोज़ इशा के बअ़द उसकी मुलाक़ात को जाते हैं और फिर अपनी रंज भरी मक्के की दास्तान सुनाते है, किसको ? उसको जिसने आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर पत्थर बरसाये थे और आप

को अपने नज़दीक ज़लील किया था यह है "तू अपने दशमन को प्यार कर।"

जब मक्का फ़त्ह हुआ तो हरम के सहन में किस हरम के सहन में ? जहां आप को गालियां दी गयीं, आप के क़त्ल की तजवीज़ मंजूर हुई, कुरैश के तमाम सरदार मफ़्तूहाना खड़े थे, उन में वह भी थे, जो इस्लाम के मिटाने में एड़ी चोटी का ज़ोर लगा चुके थे, वह भी थे जो आप को झुठलाया करते थे, वह भी थे जो आप की हजवें किया करते थे, वह भी थे जो आप को गालियां दिया करते थे वह भी थे जो ख़ुद इस पैकरे क़ुदसी के साथ गुस्ताख़ियों का हौसिला रखते थे, वह भी थे जिन्होंने आप पर पत्थर फेंके थे, आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के रास्ते में कान्टे बिछाए थे, आप पर तलवारें चलाई थी, वह भी थे जिन्होंने आप के अ़ज़ीज़ों का ख़ूने नाहक़ किया था, उन के सीने चाक किये थे, और उनके दिल व जिगर के टुकड़े किये थे, वह भी थे जो ग़रीब और बेकस मुसलमानों को सताते थे, उनके सीनों पर अपनी जफ़ाकारी की आतिशी मुहरे लगाते थे, उनको जलती रेतों पर लिटाते थे, दहकते कोयलों से उनके जिस्म को दाग़ते थे, नेज़ों की अन्नी से उनके बदन को छेदते थे आज यह सब मुजरिम सर निगूं सामने थे पीछे दस हजार ख़ून आशाम तलवारे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के एक इशारे की मुंतज़िर थी, दफ़अ़तन ज़बाने मुबारक खुलती है, सुवाल होता है क़ुरैश! बताओं मैं आज तुम्हारे साथ क्या सुलूक करूं? जवाब मिलता है "मुहम्मद ! तू हमारा शरीफ़ भाई और शरीफ़ भतीजा है, इरशाद होता है, "आज मैं वही कहता हूं जो युसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा था : ला तस्रीब अ़लैकुमुलयौम" (आज के दिन तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं) "इजहबू फअन्तुमुत्तुलकाअ" (जाओ तुम सब आज़ाद हो)

यह है दुश्मन को प्यार करना और मुआफ़ करना, यह है इस्लाम के पैगम्बर का अ़मली नमूना और अ़मली तअ़लीम जो सिर्फ़ ख़ुश बयानियों और शीरीं जबानियों तक महदूद नहीं बल्कि दुन्या में वाकिआ और अ़मल बन कर ज़ाहिर हुई है।

यही नुक्ता है कि जिसके बाइस तमाम दूसरे मज़ाहिब अपने पैगम्बरों और रहनुमाओं के मीठे मीठे अलफ़ाज़ की तरफ़ दुन्या को बुलाते हैं और बार बार उन ही को दोहराते हैं कि उनके सिवा उनके पास कोई चीज नहीं और इस्लाम अपने पैग़म्बर के सिर्फ़ अलफ़ाज़ नहीं बल्कि अ़मल और सुन्नत की दअ़वत देता है। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने दुन्या से रूख़्सत होते वक़्त फ़रमाया था "तरक्तु फ़ीकुम अस्सिक्लैन् किताबुल्लाह व सुन्नती" (मैं तुम में दो मरकज़े सिक्ल छोड़े जाता हूं ख़ुदा की किताब और अपना अमली रास्ता)

यही दोनों मरकजे सिक्ल अब तक क़ाइम हैं और ता कियामत क़ाइम रहेंगे।

इसीलिए इस्लाम किताबुल्लाह के साथ अपने पैग़म्बर की सुन्नत की पैरवी की भी दअ़वत देता है। "लकदकान लकुम फी रसूलिल्लाहि उस्वतुन हसनतुन"

(लोगों तुम्हारे लिये ख़ुदा के रसूल की जिन्दगी में बेहतर नमूना है)

आसी को ना कर मरदूद

आसी लखनऊ

गाओ हम्द ख़ुदा की यारो पढ़ो नबी पर अपने दुरूद
सल्लि व सल्लिम अ़ला मुहम्मद सल्लि व सल्लिम मेरे वदूद
रहमत अपनी सब पर कर दे ग़ाइब हैं या हैं मौजूद
बरज़ख़ के भी बाशिन्दों पर तेरा करम हो तेरा जूद
याद रहे लोगो ये सुन लो बे ईमाँ है कुलफत में
नाशुक्रे मुन्किर की ख़ातिर दुआ तुम्हारी है बेसूद
चार रोज़ की दुन्या ये है करो फ़िक्र उक्बा की तुम
करो इताअ़त नबी की मेरे जो चाहो अपनी बिहबूद
करो मशक्कत तुम से जो हो रब से चाहो अक्ले हलाल
ख़ादिम बन कर रहो यहां तुम रब हो राज़ी हो मक़्सूद
शिर्को बिदअ़त बुरी बला है रहो हमेशा इन से दूर
रब की इताअ़त फ़र्ज़ है तुम पर वही तुम्हारा है मअ़बूद
उम्र तो सारी हम ने गंवा दी लुत्फ़े दुन्या लेने में
तेरे करम से होश अब आया आसी को ना कर मरदूद

आपके प्रश्नों के उत्तर?

इदारा

प्रश्न : मैंने अपनी बच्ची के अ़क़ीक़े के लिए एक बकरी ख़रीदी और अ़क़ीक़े की नीयत से ज़ब्ह करके खाल उतार कर जब पेट चाक किया तो उस के पेट से एक ज़िन्दा बच्चा निकला जिसे दूध पिलाया गया फिर आटा घोल कर पिलाया गया वह ज़िन्दा है। कुछ अ़ज़ीज़ों को मअ़लूम हुआ तो उन्होंने गोश्त खाने में कराहत महसूस की और गोश्त लेने से इन्कार कर दिया बहरहाल गोश्त खाया गया और जिसने खाया उसे खिलाया भी गया सुवाल यह है कि क्या ऐसी बकरी के गोश्त खाने में कोई कराहत है ? और यह कि अ़क़ीक़ा हुआ या नहीं और उस बच्चे को क्या किया जाए ?

उत्तर : ऐसी बकरी के गोश्त खाने में शरअ़ी तौर पर कोई कराहत नहीं, आप की बच्ची का अ़क़ीक़ा हो गया। ज़िन्दा निकले हुए बच्चे को पाले आप उस के मालिक हैं जो चाहें करें।

प्रश्न : पड़ी चीज पाने का क्या हुक्म है ?

उत्तर : कोई चीज़ पड़ी देखी और उस को उठा लिया तो अब जरूरी हो गया कि उस चीज़ के मालिक को तलाश करें और जब यक़ीन हो जाए कि अस्ल मालिक यही है, तो उस को दे दें मालिक को तलाश करने में कोशिश करें मुनासिब जगहों पर एअ़लान करें, इसी तरह अस्ल मालिक पा लेने की तदबीरे करें उससे चीज़ की पहचान पूछें गरज़ कि सहीह मालिक को तलाश करने में जो मुम्किन हो वह करे और पड़ी हुई चीज़ को मालिक तक पहुचानें में कोताही न करें वर्ना गुनाह होगा। अगर मालिक न मिले तो उसे ख़ैरात कर दें, ज़रूरत मन्द हों तो ख़ुद काम में लाए लेकिन अगर बअ़द में मालिक मिल गया तो उसको उस चीज़ की क़ीमत अदा करना जरूरी होगा सिवा इसके कि वह ख़ुद मुआ़फ़ कर दे।

पड़ी हुई चीज़ जो उठाएगा उस पर यह बयान की हुई ज़िम्मेदारियां आएंगी जिसने पड़ी हुई चीज़ नहीं उठायी न वह गुनाहगार होगा न उस पर कोई ज़िम्मेदारीं लेकिन अच्छा यही है कि पड़ी हुई चीज़ उठा ली जाए और यह ज़िम्मेदारी ली जाए इनशा अल्लाह सवाब मिलेगा। लेकिन इस ज़माने में बड़े धोखे हो रहे हैं कोई तो किसी को फंसाने के लिए पड़ी चीज़ रास्ते में डाल कर ताक में बैठता है और उठाने वाले पर तरह तरह के इल्ज़ाम लगाता है, कोई बम वग़ैरह छुपा कर रास्ते में डाल देता है और उठाने वाला ख़त्रे से दो चार हो जाता है इसलिए पड़ी चीज़ उठाने में एहतियात बरते और चाहिए कि ख़ुद हाथ न लगाए पुलिस को ख़बर कर दें।

प्रश्न : औरतें आपस में इस तरह सलाम करती हैं कहती हैं, ख़ाला सलाम, दादी सलाम, वग़ैरह इस का क्या हुक्म है ? और उन को किस तरह सलाम करना चाहिए ?

उत्तर : औरतों को आपस में मर्दों ही की तरह अस्सलामु अ़लैकुम व रह़मतुल्लाह कहना चाहिए और इसी तरह (मर्दों ही की तरह) जवाब देना चाहिए, न औरतों का लिहाज करके मुअन्नस का सीग़ा लाए न खाली लफ़्ज़ सलाम कहें। अस्सलामु अ़लैकुम कहने में एक नेकी मिलती है और अस्सलामु अ़लैकुम व रह़मतुल्लाहि व बरकातुहू कहने में तीस नेकियां मिलती है। यही हाल जवाब का है। औरतों को आपस में मुसाफहा (हाथ मिलाना) भी करना चाहिए।

प्रश्न : आज कल निकाह को बहुत मुश्किल कर दिया गया आसान तरीक़ा लिखिये।

उत्तर : सय्यिदतुन्निसाइ फ़ातिमा ज़हरा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की लाडली बेटी का निकाह़ इस तरह हुआ कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ने शर्माते हुए पैग़ाम दिया अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़बूल फ़रमा लिया। ह़ज़रते अनस निकले और हज़राते अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान, तलह़ा, ज़ुबैर और कुछ अन्सार रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को बुला लाए, आप सल्लल्लाहुअ़लैहि वसल्लम ने ख़ुत्बा पढ़ा और चार सौ मिस्क़ाल चान्दी महर मुक़र्रर कर के निकाह़ पढ़ा दिया और पैदल रूख़सत कर दिया, जहेज़ में कुछ ज़रूरत की चीज़ें दीं जो मशहूर हैं। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ने वलीमे में जौ की रोटियां खुर्मा और मालीदा खिलाया।

४०० मिस्क़ाल= एक किलो ७५० ग्राम

अल्लाह की बड़ाई

मौ० खुर्रम अली
अनुवाद :– मौ० आफताब आलम नदवी खैराबादी

ये जानना चाहिए कि हमारे पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दो काम हैं एक तो दुनिया में हिदायत दूसरे आखिरत में गुनाहगारों की शफ़ाअत सो इन दोनों में भी अल्लाह ने हजरत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बिल्कुल इख़्तियार नहीं दिया अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है "कि ऐ मुहम्मद जिसे आप चाहे राह पर नहीं ला सकते लेकिन जिसे अल्लाह चाहता है राह दिखाता है और वही खूब जानता है जो राह पर आवेंगें (अलक़सस : ५६)

फायदह : बस हज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का काम सिर्फ़ हक़ बात का बयान कर देना था और अगर हिदायत इख़्तियार में होती तो अबू जहल भी मुसलमान हो जाता अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इरशाद फ़रमाता है "कौन है जो शफाअत करे अल्लाह के पास मगर उस के हुक्म से (अलबक़रः २५५)

फायदह : यानी अल्लाह का हाल मिस्ल बादशाह के नही समझना चाहिए क्यों कि बादशाह जिसपर गुस्सा होता है तो अमीर व वज़ीर उसको बचा लेते हैं और भले ही उसका जी न चाहे मगर इनकी ख़ातिर करता है क्योंकि बादशाह जानता है कि अगर मैं इनकी ख़ातिर न करूंगा तो अमीर व वज़ीर मेरे मुल्क में खलल डालेंगे और अल्लाह को अपने काम में किसी दुसरे की परवाह नहीं इसके रूबरू क्या ताक़त किसी पैगम्बर या वली की कि वह अल्लाह के हुक्म के बगैर किसी की शफाअत करें हमारे अजरत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) भी जब अल्लाह का हुक्म पावेंगे तब कियामत के दिन शफअत करेंगे।

फ़ायदह– अल्लाह अकबर यहां से अल्लाह की ख़ुदावन्दी और जलालत बूझा जाता है कि कैसा मालिक ज़बरदस्त और बे परवा है कि किसी फरिश्ते या पैग़म्बर को किसी चीज का इख़्तियार नहीं दिया हर चीज अपने इख्तियार में रखी है बगैर अल्लाह के हुक्म मुम्किन नही कि एक बूंद आसमान से पानी गिरे इस जमाने के नादान लोगों ने ऐसा गलत एतिकाद अब्बिया औलिया के साथ बढ़ाया है कि अल्लाह की बड़ाई और मालिकियत जैसी चाहिए वैसी दिलों में नही रही क्योंकि दुनियां की मुरादे इनही से मांगते है और जानते हैं कि हम कितने ही गुनाह करेंगें आखिरत में भी वाह सब बख्शवा लेंगे और हकीकते हाल जो था सो मालूम हुआ कि पैगम्बर को भी खुद अपनी जान का इख्तियार नहीं और वोह भी अल्लाह के हुक्म के बगैर बख्शवा नहीं सकेंगे अक्सर लोगों से सुना है कि कहते हैं वाकई अल्लाह के सिवा किसी को कुछ इख़्तियार नहीं लकिन औलिया अल्लाह के मकबूल बन्दे है जिस चीज की अल्लाह से तलब करते हैं वोह कुबूल करता है इसका जवाब यह है कि अल्बत्ता इनकी दुआ अक्सर कुबूल होती है हर दुआ इनकी भी कुबूल नहीं होती हजरत नूह अलैहि० ने अपने बेटे के वास्ते दुआ की और हजरत इब्राहीम अलैहि० अपने बाप के वास्ते दुआ की मौ० आफताब आलम नदवी खैराबादी और हमारे हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने चचा के वास्ते दुआ की किसी की दुआ कुबूल न हुवी और हुक्म हुवा कि नादान मत बनो इस मुकदमें में हमारी मरजी के खिलाफ दुआ न करा– इससे साफ मालूम हुवा कि दुआ उनकी वही कुबूल होती है जो मरजीये खुदावंदी के मुवाफिक हों– हर चन्द कि ये पाक लोग है मगर फिर भी बन्दे है कुछ इनका अल्लाह पर जोर नहीं कि जो चाहे वही हो।

अल्लाह तआला फरमाता है "और कहते हैं रहमान ने करलिया किसी को बेटा वह हरगिज इसलायक़ नहीं लेकिन वह बन्दे हैं जिनको इज्जत दी है उस से बढ़ कर नहीं बोल सकते और वह उसी के हुक्म पर काम करते हैं। (अल अंबिया–२६)

फायदह : काफिर बअजे पैगम्बरों और फरिश्तों को अल्लाह का बेटा कहते थे सो फरमाया बेटे नहीं ये समझो कि वह बन्दे हैं मकबूल और इज्जत वाले हैं । लेकिन जब तक अल्लाह की मरजी और इजाजत न पायें उसके सामने खुद आगे बढ़ कर बोल नहीं सकते या बगैर अल्लाह के हुक्म के कुछ कर सकें। अल्लाह तआला फरमाता है कि "इस को मालूम है जो उनके आगे है और उनके पीछे और वह सिफारिश और शफाअत नहीं करते मगर उसी की जिस से अल्लाह राजी हो और वह उसकी हैबत से डरते हैं – अल अंबिया – २८

सोचना महत्वपूर्ण है

आसिफ जलाल

एक घंटे तक गहराई से सोचना (पूरी तनमयता के साथ) सत्तर साल की (मेकनिकल) इबादत से बेहतर है। (मुहम्मद सल्ल०)

कहा जाता है कि हर वह व्यक्ति जो चिन्तन मनन करता है एक बादशाह के समान है। वह किसी का प्रतिनिधि नहीं होता, उसकी सोचने की पोजीशन असीमित और सुप्रीम है। मनोवैज्ञानिकों ने माहौल से प्राप्त सूचना क मानसिक पुनर्व्यवस्था और हमारी स्मृति में एकत्र अलामतों (Symbols) के रूप में परिभाषित किया है। हम भाषा संकेतों तथ कल्पनाओं का प्रयोग सोचने में करते हैं।

क्या आप ने कभी विचार किया है कि किसी बौद्धिक क्रियाकलाप, अविष्कार अथवा खोज के लिए किसी विषय पर चैतन्य और केन्द्रित चिन्तन की जरूरत होती है ? यदि आप अपने आस पास देखेंगे तो पायेंगे कि आदमी केवल दूर के अर्थ में एक चिन्तन प्राणी है। वास्तव में आप को अपने आस पास के तथा कथित बुद्धिजीवियों के बीच भी चिन्तन से खाली और मूर्खता पर आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए।

हम चिन्तन बिल्कुल नहीं करते ऐसा नहीं है, परन्तु हम किसी शैक्षिक रूचि अथवा किसी अहश्य विषय वस्तु पर गहन चिन्तन नहीं करते। अगर किसी ने हमारी इनसल्ट कर दी या हमारे पैरेन्टस ने हम को दण्डित कर दिया तो हम पूरी रात सोचते रह जा सकते हैं ,किन्तु हम अपने को गम्भीर शैक्षिक चिन्तन के हवाले कभी नहीं करते।

शैक्षिक संस्थाओं में हम दिमाग से काम लेने तथा दिशा विशेष में ध्यान केन्द्रित कर सोचने को प्रोत्साहित नहीं होते। स्कूल की शिक्षा हमें अपनी विचार श्रंखला को जोड़ना नहीं सिखाती है अधिकतम, हम से पढ़ने और विषयवस्तु को याद करने के लिए कहा जाता है। परन्तु पढ़ना अपने दिमाग के बजाए किसी दूसरे के दिमाग से सोचने के समान है क्योंकि मौलिक विचारों वाला बनने के लिए और इस जीवन में कुछ सार्थक बनने के लिए हम को किसी विषय पर भली भांति सोचना होता है अल्बर्ट आइन स्टीन का कथन है कि इस संसार के सर्वोत्तम दिमाग अपनी मानसिक क्षमता के दस प्रतिशत से कम का प्रयोग करते हैं, शेष अप्रयुक्त पड़ी रहती है।

अमरीकी पादरी डा०फोर्सडिक कहते हैं कि वह चिन्तन को परम्आवश्यक मानते हैं और वह इसके लिए प्रतिदिन समय निकालते हैं, वह कहते हैं इस से उन्हें अपनी स्पीच और राइटिंग में विलक्षण सुस्पष्टता तथा शक्ति प्राप्त होती है।

शापेन हावर के अनुसार सोचना हर व्यक्ति के लिए सामान्यतः नेचुरल नहीं है। इसे उसी तरह प्रज्वलित होना चाहिए जैसे आग हवा के झोंको से प्रज्वलित होती है। और जो किसी विषय में कोई रूचि के द्वारा पोषित होती है। एक आदमी पढ़ने और सीखने के लिए बैठ सकता है, किन्तु अपनी धुन से सोचने के लिए नहीं। शापेन हावर के अनुसार विद्वान वह है जो किताबों की विषय वस्तु को पढ़ चुका हेाता है। विचारक, विलक्षण बुद्धि वाले और वह जिन्होंने दुनिया को रौशन किया है और मानव जाति के काफिले को आगे बढ़ाया है, वह हैं जिन्होंने दुनिया की किताबों का सीधा प्रयोग किया है।

शापेन हावर उन लोगों के प्रति अति कार्कश हैं जो केवल पढ़ते हैं और कोई चिन्तन नहीं करते। वह कहते हैं "वस्तुतः यह व्यक्ति के अपने बुनियादी विचार हैं जो उन में सत्य और जीवन रखते हैं। क्योंकि यही वह है जिन्हें वह सही और पूर्णतः समझता है। दूसरों के विचारों को पढ़ना किसी अन्य के बचे हुए खाने को खाने, किसी अजनबी के त्यागे हुए कपड़ों को पहनने के समान हैं।"

विचार हर समय नहीं आते। इस के लिए सही समय का इन्तेजार करना पड़ता है। बड़े महान दिमाग वाले भी हर समय चिन्तन नहीं कर पाते। अतः खाली क्षणों का प्रयोग पढ़ने के लिए किया जा सकता है। जो किसी के अपने विचार के लिए स्थानापन्न का काम करता है।

किसी विचार की मौजूदगी शापेन हावर के अनुसार अपने प्रियतम की मौजूदगी की तरह हैं हम कल्पना कर सकते हैं कि हम कभी नहीं भूलेंगे। पर ऐसा नहीं है अगर लिख नहीं लिया हैं, तो हम अपने बेहतरीन विचार भूल

सकते हैं। इसलिए विचारों को रिकार्ड करने के लिए हमेशा अपने साथ कलम और पाकेट नोट बुक रखें।

अब प्रश्न यह है कि हम अपने सोचने की पद्धति कैसे शुरू करें। एक तरीका किसी क्लासिकी को लेने का है जैसे प्लेटो, मान्टेग्ने अथवा कुर्आन और फिर जो कुछ पढ़े उस पर मनन करें। आप बहस से सहमत हो सकते हैं, विचाराधीन विषय की अन्य सम्भावनाओं और पहलुओं के बारे में सोचें, या अपना स्वयं का विचार रखें। इस के अलावा कोई समाजिक विषय या भौतिकी की कोई समस्या ले सकते हैं, उस पर सोचें मनन करें, उसका हल निकालें, उस विषय पर और अधिक जानकारी एकत्र करें और एक नई थीसिस प्रस्तुत करें। वास्तव में चिन्तन के लिये क्षेत्र की रेंज की कोई सीमा नहीं है।

हमारा वातावरण भी हमारे अन्दर सोचने और कल्पना को प्रज्वलित करने की एक उपजाऊ क्यारी है। उदाहरण के लिए दक्षिण अफ्रीकास में महात्मा गान्धी को गोर लोगों ने फर्स्ट क्लास डिब्बे में यात्रा करने की इजाजत नही दी और उनका सामान डिब्बे से बाहर प्लेटफार्म पर डाल दिया गाड़ी चली गयी और गान्धी जी को रेलवे स्टेशन पर कपकपाती सर्दी में छोड़ गयी। इस घटना से उन्हें अपनी ड्यूटी पर सोचना पड़ा, राजनीतिक रणनीति अंग्रेजों के खिलाफ बनाने, अनेक पुस्तके लिखने और एक सोची समझी फिलास्फी विकसित करने जिसे आज हम अहिंसा के नाम से जानते हैं, पर तैयार किया। इसी तरह अगर आप मनाव जीवन का निरीक्षण करें और प्राकृतिक घटनाओं को देखें तो उन पर दिमाग लगायें अथवा उस मानसिक शक्ति का प्रयोग करें जो अल्लाह ने आप को दी है, और आप भी एक असाधारण विचारक बन सकते हैं।

प्रायः पढ़ना विचारों का महत्वपूर्ण स्रोत बनता है किसी पुस्तक में वर्णित किसी विषय को अगर आप पढ़ रहें हैं और उस पर गम्भीरता से मनन कर रहें है तो आप के अन्दर कोलाहल और हलचल मचा देने वाले विचार जागृत होंगे। दरअसल, सबसे अधिक मूल विचारकों की बेहतरीन रचनायें जो कुछ उन्होंने किताबें में पढ़ा और जो कुछ अपने जीवन में अनुभव किया उन सब का निचोड़ है। फ्रायड, डार्विन, मार्क्स तथा आइनस्टीन चार व्यक्तियों ने जिन्होंने आज की दुनिया पर हावी विचारधारा को स्वरूप प्रदान किया, अपने समय में मौजूद विचारों से मदद ली।

शापेनहावर इसकी पुष्टि करता है जब वह कहता है कि एक वैज्ञानिक विचारक वही करता है जो अनपढ़ लोग करते है किन्तु एक बड़े पैमाने पर उसे चूंकि अधिक ज्ञान की जरूरत होती है, उसे अधिक पढ़ना चाहिए। लेकिन उसे इन सब में महारत हासिल करना चाहिए ताकि वह इन्हें अपनी अंर्तदृष्टि (इन साइट) के सिस्टम में आत्मसात (उसी मिलेट) कर सके। और इस प्रक्रिया में, उसके अपने विचार, किसी तन्त्र के बास की तरह हमेशा हर चीज पर हाबी होते हैं और कभी भी अन्य टोन से दबते नहीं।

जो लोग चिन्तन करतें हैं और एकाग्रचित होने की तकनीकी का अभ्यास करते हैं, तर्क देते हैं कि मूल विचार मन की एकाग्रता से निकलते हैं, सर्वाधिक शक्तिशाली विचार तथा दबाव डालने वाले विचार हैं जो इतिहास का रास्ता बनाते हैं, व्यक्ति इस से प्राप्त करता है। उनके अनुसार चिन्तन तकनीक व्यक्ति को एक ऐसी ऊँची हालत में पहुंचने में मदद करती है जो तर्क से परे होती है तब आप को ज्ञान प्राप्ति के लिए किताबों की जरूरत नहीं होती। आप का अपना दिमाग स्वयं एक किताब बन जायेगा जिसमें असीम ज्ञान होगा। इस सन्दर्भ में यह जानना मुनासिब है कि हमारे प्यारे नबी सल्ल० भी एक गुफा में जाया करते थे और अल्लाह की बड़ाई पर अपना ध्यान केन्द्रित करते थे। और इस प्रक्रिया के द्वारा ही उनमें ज्ञान का एक स्रोत फूट निकलता था, सावधानी का एक शब्द– दिवास्वप्न (ख्याली पुलाव), कोरी कल्पना, वहम आदि जो व्यक्ति को दुनिया की हकीकत से बचने में मदद देते है, सोचने की परिधि में नहीं आते।

(आई सी एल न्यूज लेटर फरवरी २००७ से साभार)

अनुवाद तथा प्रस्तुति :एम० हसन अंसारी।

बेशक जमीन व आसमान बनाने में और रात, दिन के आगे पीछे आने जाने में अक्ल वालों के लिए निशानियां हैं; (यह अक्ल वाले लोग जिन की हालत यह है कि) वह लोग अल्लाह तआला को याद करते हैं खड़े भी बैठे भी और आस्मानों और जमीन की पैदाइश में गौर करते हैं और बोल उठते हैं कि ऐ हमारे रब आप ने इन को बेकार नहीं पैदा किया आप ऐबों से पाक हैं आप हम को जहन्नम की आग से बचा लीजिए। (पवित्र कुर्आन : १६०, १६१)

वेदों की मआलूमात

इदारा

वेद चार हैं ऋग्वेद, साम्वेद, यजुर्ववेद, अर्थवेद, यह हिन्दु, धर्म की मौलिक (बुन्यादी) पुस्तकें हैं, वेदों केबयान में वेदों से मुतअल्लिक कुछ नाम और आते हैं वह यह है संहित, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, इनकी मआलूमात के लिए मैंने वेदों के एक आलिम (आचार्य) महाराजा विकाशानन्द ब्रह्मचारी जी से सुवालात किये। उन्होंने जवाबात दिये नीचे सुवाल व जवाब दिये जाते है। कठिन शब्दों का अर्थ ब्रैकेट में दिया जाएगा। (सम्पादक)

प्रश्न : क्या संहिता में वेद के श्लोकों का अर्थ (मतलब) बताया गया है ?

उत्तर : ऐसा नहीं हैं। मूलतः (अस्ल में) वेद मंत्र संग्रह या संकलन (जमअ) किया गया है, जिस कारण (इस वजह से) इसको संहिता कहा जाता है। जैसे ऋग्वेद संहिता, सामवेद संहिता आदि।

प्रश्न : क्या ब्राह्मणों में वेदों के श्लोकों का अर्थ बताया गया है ?

उत्तर : ब्राह्मण ग्रन्थ, मूलतः यज्ञ विधि वर्णन ही उद्देश्य है (यअनी ब्राह्मण किताबों का मक्सद यज्ञ का तरीका बताना है) चारो वेद के पृथक पृथक (अलग अलग) ब्राह्मण हैं, जिस वेद का ब्राह्मण है उसी वेद का मंत्र लेकर ही यज्ञ वर्णन (जिक्र) गया है। जिस कारण (जिसके सम्बन्ध से) मंत्र व्याख्या (तशरीह) भी कुछ मिलती है।

प्रश्न : क्या आरण्यक वेद के श्लोकों की टीका है ?

उत्तर : ऐसा नहीं है अपितु आरण्यक, चतुर्आश्रम के अनुसार (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वान प्रस्थ, सन्यास) वान प्रस्थ, अर्थात संसार छोड़कर वन (जंगल) में रहने के लिए आचरण (अख्लाक) नियम (कानून) ग्रन्थ (किताब) है। लेकिन जिस वेद का आरण्यक है, उस वेद मंत्र द्वारा ही वर्णन किये जाने के कारण कुछ मंत्र की टीका व्याख्या मिलती है।

प्रश्न : क्या उपनिषद वेदों की टीका है या मुस्तकिल किताबें हैं ?

उत्तर : एक मात्र ''ईश उपनिषद'' छोड़कर और किसी भी उपनिषद का मंत्र के साथ वेद मंत्र का सीधा सम्बन्ध नहीं है। शेष उपनिषद में पृथक एवं सम्पूर्ण ग्रन्थ हैं, ऋषि भी अधिकांश उपनिषद में पृथक हैं लेकिन प्रत्येक उपनिषद भाव से किसी न किसी संहिता (वेद) या ब्राह्मण या आरण्यक से सम्बन्ध है। आगे कुछ उपनिषद का ताअल्लुक वेदों, ब्राह्मणों, आरण्यकों से बताया गया है उस को नक्ल नहीं किया इसलिए कि उसे पंडित ही समझ सकता है। खुलासा यह कि :–

ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद अथर्व वेद हिन्दू धर्म की बुन्यादी किताबे हैं, वेदों को संहिता भी कहते है। वेदों से मुतअल्लिक तीन किताबे और हैं जिनकी कई कई जिल्दें हैं। ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद।

ब्राह्मण में वेद मंत्रों के जरीअे यज्ञ का तरीका सिखाया गया है इस तरह जिन मंत्रों से यज्ञ का बयान लिया गया है उन मंत्रों की तशरीह ब्राह्मणों में आ गई है और तकरीबन हर वेद से मंत्र लिये गये हैं पस ब्राह्मणों में उन ही वेद मंत्रों की तशरीह है जिन का तअल्लुक यज्ञ से है।

आरण्यकों में वेदों की उन ही मंत्रो की तशरीह है जिनमें जंगल में जिन्दगी गुजारने ''यअनी वानप्रस्थ'' पर अमल करने के आदाब है। वह मंत्र चाहे जिस वेद से तअल्लुक रखते हों।

उपनिषदों में हिन्दू फल्सफ–ए–इलाहियात और रूहानियत का बयान है। इन में वेदों के मंत्रों, ब्राह्मणों, आरण्यकों सभी से मदद लेकर इन का ऋषि एक मुस्तकिल इल्म बयान करता है। औरंगजेब का भाई दारा शिकोह उपनिषदों से बहुत मुतअस्सिर था। लेकिन याद रहे कि इन सारी किताबों में कल्बी इल्हामात जरूर है लेकिन वह्ये इलाही मक्कूद है। यह भी याद रहे कि ब्राह्मण आरण्यक और उपनिषद वेदों के कुछ मंत्रों की तशरीह करतें हैं कुल की नहीं। चारों वेदों की टीकाऐं (तशरीह) अलग से उन के आलिमों (आचार्यों) ने लिखी है।

बेशक अल्लाह के नज्दीक दीन तो इस्लाम ही है। (३:२६)

जो शख्स इस्लाम के सिवा कोई दीन तलब करेगा तो वह मक्बूल न होगा और वह आखिरत में घाटे में रहेगा। (३:८५)

थायराइड (हल्क के गुदूद)

आयोडीन की कमी से होने वाली समस्याऐं

लेख डा० राजेश अग्रवाल

आधुनिक व व्यस्त जीवनशैली के चलते थायराइड की समस्या अधिकतर लोगों में देखने को मिलती है लेकिन पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में इस बीमारी का अनुपात आठगुना अधिक होता है, कुछ मामलों में तो बच्चों में भी थाराक्सिन हार्मोन की कमी जन्मजात होती है जिसकी प्रमुख वजह है कि मानव शरीर में आयोडीन की कमी होने के कारण ही थाएराइड से संबंधित बीमारियां होती है, हिमाचल प्रदेश, लद्दाख जैसे पहाड़ी इलाकों में आयोडीन की कमी की वजह से थाएराइड की बीमारी अधिक होती है।

थायराइड क्या है ?

थायराइड एक होर्मोन ग्रंथि है जो तितली के आकार सी गले के बीचोबीच प्रत्येक मनुष्य मे होती है और थूक निगलने पर ऊपर नीचे होती हुई दिखाई देती है, थायराइड न तो किसी बीमारी का नाम है न ही हार्मोन का यह एक ग्रंथि का नाम है जिस में थायराक्सिन ग्रुप (T_3, T_4) के हारमोन का निर्माण होता है आम लोगों की भाषा में इसे थायराइड हारमोन या थायराक्सिन हार्मोन कहते हैं, यह हार्मोन मानव शरीर में शारीरिक, बौद्धिक मानसिक एंव जननांगों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

थायराइड से संबंधित बीमारियां

थायराइड ग्रंथि में हार्मोन का निर्माण कम होने पर हापोथायराइडिज्म होता है, शरीर में थायराक्सिन हार्मोन की कमी होने पर वजन बढ़ना, आलस, नींद अधिक आना, रूखी त्वचा, आवाज में भारीपन या बदलाव, महिलाओं में मासिक धर्म अधिक होना, लंबाई न बढ़ना, निसंतान होना और शरीर में सूजन होना इस बीमारी के कुछ खास लक्षण हैं।

थायरोटौक्सिकोसिस

थायराइड हार्मोन की अधिकता होने पर हाइपर थायराइडिज्म या थायरोटौक्सिकोसिस हो सकता है, इस बीमारी के लक्षण है वजन कम होना, दस्त लगना, हाथों में कंपन, गरमी अधिक लगना, मासिक धर्म की अनियमितता या कमी और धड़कनों का तेज होना।

थायराइडाइटिस :

थायराइड ग्रंथि में होने वाला इन्फेक्शन या इन्फ्लेमेंटरी सूजन को थायराइडाइटिस कहते हैं इस बीमारी में मरीज को बुखार, थायराड में दर्द, थूक निगलने में तकलीफ तथा हार्मोन की अधिकता हो जाती है और बाद में हार्मोन की कमी भी हो जाती है कभी कभी थायराइड ग्रंथि में एब्सीस या पस भी बन जाता है।

थायराइड का कैंसर :

इस बीमारी में गठान की सूजन, गठान में गठान, आवाज में बदलाव, खाना निगलने में तकलीफ, वजन कम होना और सांस लेने में परेशानी होती है, इस बीमारी के होने की आंशका ज्यादातर बड़ी उम्र या वृद्धावस्था में ही होती है।

बीमारियों के दौरान के किए जाने वाले टेस्ट

इन बीमारियों से पीड़ित रोगियों के खून की जांच जैसे **T3,T4,Tsh, FreeT3, FreeT4,** थायराइड एंटीबाडीज आदि जांच करवाए जाते हैं कुछ गंभीर मामलों में मरीज की थायराइड ग्रंथि का अल्ट्रासाउंड और फाइल नीडल एस्पीरेशन सायटोलाजी **(FNAC)** भी करवाना पड़ सकता है।

आयोडीन व थायराइड का संबंध

आयोडीन मानव शरीर की कार्यप्रणाली को सुचारू रूप से व्यवस्थित करने वाला महत्वपूर्ण तत्व है जो हमारी थायराइड ग्रंथि से संगृहीत होता है, आयोडीन की मदद से ही थायराक्सिन हार्मोन का निर्माण होता है।

पालक, पानी, हरी सब्जियां, मटन, धान, मछलियां (समुद्री) एवं समुद्री भोजन आयोडीन के मुख्य स्रोत हैं और आयोडीन की कमी से होने पर शरीर थायराइड संबंधी बीमारियों से पीड़ित हो जाता है, क्योंकि आयोडीन की कमी होने पर थायराइड ग्रंथि का आकार बढ़ जाता है या उसमें सूजन आ जाती है जिसे घेंघा (गायटर) कहते हैं, तब भी यह ग्रंथि अपने आप काम करती रहती है और धीरे धीरे थायराइड हार्मोन की अधिकता हो जाती है।

भोजन करते समय कुछ सावधानियां बरती जाएं तो गायटर की रोकथाम की जा सकती है, कुछ भोज्य पदार्थों में ऐसे तत्व होते हैं, जो गायटर बनाने में सहायता करते है, गायटरोजन भोजन में उपस्थित आयोडीन का उपयोग नहीं होने देता, जैसे गोभी में उपस्थित

ग्लूकोसीनेट और सरसों में भी गायटरोजन होते हैं।

आयोडीन युक्त नमक

हमारे देश में नमक का प्रयोग खाना पकाने के समय किया जाता है जोकि सही नहीं क्योंकि आयोडीन अधिक तापमान पर वाष्पीकृत हो जाता है, कुछ बातों को ध्यान में रखा जाए तो आयोडाइज्ड नमक का सेवन स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है, मसलनः

आयोडाइज्ड नमक गहरे रंग के पैकेट एवं डब्बे में रखें

नमक के डब्बे का ढक्कन बंद रखे

आयोडाइज्ड नमक को खरीदते समय उसके ऊपर नमक पैक करने की तारीख एवं एक्सपायरी डेट अवश्य देख लें।

नमक को खाते समय उपयोग में लाऐं, पकाते समय नहीं।

आयोडीनयुक्त नमक एम महंगा विकल्प है, इसका एक आसान उपाय यह है कि आयोडाइज्ड आयल का घोल या मांसपेशीय इंजेक्शन जोकि बहुत ही सस्ते विकल्प है और वर्षों तक कारगर होते हैं इन्हें विटामिन 'ए' के समान या सामान्य टीकाकरण कार्यक्रम के अंतर्गत शामिल किया जा सकता है।

शिक्षा और सज़ा

छात्र को शारीरिक दंड देने के आरोप में दिल्ली के एक सरकारी स्कूल के शिक्षक को दोषी ठहराकर अदालत ने एक नजीर पेश की है। इस से न शिक्षकों की आंखें खुल जानी चाहिए जो सारे नियम–कानूनों को ताक पर रख कर मासूम बच्चों को शारीरिक सजा देते रहते हैं। आये दिन न सिर्फ सरकारी विद्यालयों से, बल्कि पब्लिक स्कूलों से भी बच्चों के साथ शिक्षकों के क्रूर व्यवहार की खबरें आती रहती हैं।

आम तौर पर इस तरह के मामलों के अभिभावक चुप होकर सह लेते हैं। इसकी वजह है सामाजिक अपयश का भय और इस सम्बन्ध में बने कानूनों की जानकारी का अभाव। लेकिन कुछ पैरेंट्स साहस के साथ सामने आते हैं। लेकिन इस सब का बच्चे के मन मस्तिष्क पर जो असर पड़ता है, उसकी भरपाई मुश्किल ही से होती हे। गौर तलब है कि वर्ष २००० में हाई कोर्ट ने दिल्ली स्कूल एजूकेशन एक्ट (डी०एस०ई०ए०) से शारीरिक सजा देने के प्रावधान को हटा दिया है। उसके करीब दो साल बाद सी०बी०एस०आई० ने एक सर्कुलर जारी कर अपने स्कूलों को प्रधानाध्यापकों को यह निर्देश दिया कि वे अपने यहां शारीरिक दंड पूरी तरह समाप्त करें। उसी वर्ष राज्य शिक्षा निदेशालय ने भी सरकारी स्कूलों को यही निर्देश जारी किया।

संशोधित डी०एस०ई०ए० के मुताबिक जो भी शिक्षक किसी छात्र को शारीरिक सजा देता है, उसे निलंबित किया जा सकता है। इस सबके बावजूद बच्चों को प्रताड़ना सहनी पड़ती है और अधिकतर स्कूल ऐसे शिक्षकों को बचाने में लगे रहते हैं। शिक्षाशास्त्र और मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि पढ़ाने जैसे काम में सजा की कोई जगह नहीं होनी चाहिए, अगर हो भी तो बहुत मामूली और प्रतीकात्मक। कठोर सजा का बच्चों के कोमल मस्तिष्क पर नकारात्मक असर पड़ता है और वे कुंठित हो जाते हैं, उनका विकास अवरूद्ध हो जाता है। बच्चों में अपराधिक प्रवृत्ति भी पैदा हो सकती है। पर हमारे देश में इस पहलू पर कम ही ध्यान दिया गया है।

हमारी शिक्षण प्रणाली बिना किसी योजना के अनियंत्रित ढंग से विकसित हुई है। शिक्षा में नीतिगत एकरूपता का घोर अभाव है। शायद इसीलिए इसमें हर स्तर पर भारी असंतुलन दिखता है। शिक्षकों के एक बड़े तबके के सामने दिशाहीनता की स्थिति है। उन्हें न तो पर्याप्त प्रशिक्षण दिया जाता है, न ही किसी तरह की मनोवैज्ञानिक सलाह आदि। कहने की जरूरत नहीं कि स्कूलों में संसाधनों के अभाव का असर बच्चों परही नहीं शिक्षकों पर भी पड़ता है। उन्हें कई बार पढ़ाने के अलावा दूसरी जिम्मेदारियां भी निभानी होती हैं। उन पर गहरा दबाव होता है जो कई बार उनके असंयत व्यवहार में प्रकट होता है।

शिक्षण जैसे कार्य के लिए शिक्षकों का मानसिक रूप से स्वस्थ और संतुष्ट रहना जरूरी है, पर वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इसकी गुंजाइश कम है। अगर हमें अपने नौनिहालों के भविष्य की चिन्ता है, अगर हम चाहते हैं कि बच्चे स्वस्थ और प्रसन्न होकर स्कूल जाएं और अच्छी तालीम हासिल करें तो शिक्षा के पूरे तंत्र को बदलना होगा। इसके लिए कानूनों से ज्यादा साधनों की जरूरत है। हमें चाहिए सुविधा सम्पन्न स्कूल, प्रशिक्षित–प्रसन्नता और उत्साहित शिक्षक। क्या सरकार इस के लिए तैयार है। (माखूज नवभारत टाइम्स २१.३.२००७)

सिगरेट पर पाबन्दी और शराब पर छूट!

मुहम्मद इकबाल

अभी हाल ही में देश के सर्वोच्च न्यायालय ने केन्द्र व राज्य सरकारों को स्पष्ट निर्देश दिये हैं कि वे नशीले पदार्थों की रोक के लिए स्पष्ट नीति बनायें। इसे सरकार की जिम्मेदारी माना गया है कि वह नशीली चीजों पर रोक के लिए संजीदा कोशिश करे। युवा पीढ़ी पर नशाखोरी की लत का जिक्र करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अब वक्त आ गया है कि पूरे देश में नशाबन्दी के लिए विचार पर गौर किया जाए। सुप्रीम कोर्ट के मुताबिक शराब पीना या पिलाना किसी का मूल अधिकार नहीं है, न ही इसे किसी की व्यक्तिगत आजादी में हस्तक्षेप माना जा सकता है बहुत पहले ही सुप्रीम कोर्ट स्पष्ट कर चुका है कि धारा १६ के अन्तर्गत किसी को शराब पीने या बेचने से रोकना उसकी व्यक्तिगत आजादी में हस्तक्षेप नहीं माना जा सकता है।

आजादी प्राप्त होने तक यही माना जाता था कि देश के लिए नशाबंदी जरूरी है। लेकिन बाद में शराब की कमाई से होने वाले फायदे को देखकर केन्द्र व राज्य सरकारों ने इसमें ढील देना शुरू किया और नशा मुक्त समाज की जिम्मेदारी से अपना पल्लो झाड़ लिया।

आज रस्मी तौर पर सिर्फ गुजरात और महाराष्ट्र में कुछ हद तक नशाबन्दी लागू है। जबकि पूरे देश में सरकार की तरफ से शराब की गंगा बहायी जा रही है ऐसे में महाराष्ट्र या गुजरात के लोग कोई दूसरे ग्रह के निवासी तो नहीं जो शराब बंदी पर डटे रहें। आज देश की कोई भी राजनीतिक दल हो शराब के सम्बन्ध में सबकी एक राय है।

मोरार जी देसाई शराब बंदी के कट्टर हिमायती थे और अवैध शराब से होने वाली मौतों की परवाह नहीं करने के पक्ष में थे, लेकिन कांग्रेस में ही अन्य लोग इतनी सख्ती के लिए तैयार नहीं थे। इन्दिरागांधी के शासनकाल में पहली बार इसे खुलकर स्वीकार किया गया। पाकिस्तानी प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो जब शिमला समझौता करने भारत आये तो वे ऐसी शराब के रसिया थे जो भारत में नहीं मिलती थी। उसे रातो–रात स्पेशल हवाई जहाज भेजकर लन्दन से मंगाया गया और उससे भुट्टो की मेहमान नवाजी की गयी।

सरकार की उदार नीति ने एक बड़े तबके को इसका आदी बनाया है और अब कानून–व्यवस्था अनुशासन हीनता, भ्रष्टाचार, अपराध और बढ़ती दुर्घटनाओं ने देश के प्रबुद्ध वर्ग को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि ये सब कब तक चलेगा। सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश से यह चिन्ता झलकती है।

देश की सरकारें उच्चतम न्यायाल के निर्देश पर कितनी गंभीर हैं यह आने वाले वक्त ही बताएगा लेकिन इसमें दो राय नहीं कि हर नशा हानिकारक है जिसका विरोध होना चाहिए। लेकिन सरकारों की अब तक की नीति एक नशे को हटा कर दूसरे को लाने की रही है। केन्द्र स्वास्थ्य मंत्री का यह बयान जो उन्होंने विश्व तम्बाकू दिवस पर बोलते हुए कहा कि वे सूचना और प्रसारण मंत्रालय के सहयोग से टीवी और फिल्मों में धूम्रपान के दृश्यों पर रोक लगाने जा रहे हैं। इसके साथ ही तम्बाकू व सिगरेट के उत्पादों की पैकेजिंग व लेबलिंग संबंधी २००६ के पारित कानून के अनुसार पैकेट पर मानव खोपड़ी और दो हड्डियां छापी जाएंगी, जो पीने वालों को मौत की याद दिलाएगी।

स्वास्थ्य मंत्री के अनुसार इससे धूम्रपान के खिलाफ माहौल बनाने में आसानी होगी। लेकिन इसी सरकार का एक और कदम वीयर और वाइन को शराब की श्रेणी से हटाने का है। जिसके बाद वीयर और वाइन आम परचून की दुकानों से खरीदी जा सकेंगी।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों का सरकार पर दबाव है कि इसे आबकारी करके दायरे से बाहर कर दिया जाए जिसके बाद इसकी कीमतों में भारी कमी होगी और देशी शराब के शौकीन इसकी तरफ बढ़ेंगे। अब बहुराष्ट्रीय कंपनियों का इरादा देशी शराब के ठेकेदारों से दो–दो हाथ करने का है। सामाजिक संगठनों के विरोध को देखते हुए सरकार इसमें अल्कोहल की मात्रा कम कर देना चाहती है। सरकार की दलील है कि इससे अंगूर और जौ उत्पादक किसानों को फायदा होगा, उन्हें बेहतर कीमत मिलेगी।

साथ ही अंगूर और जौ की खेती का विस्तार होगा। सरकार की अब तक की नीति नाम गरीबों का लेकर फायदा अमीरों को पहुंचाने की रही है। यहां भी ऐसा ही होगा। वैसे भी सरकारी निर्धारित मानकों को कोई मानता नहीं। शीतल पेय बनाने वाली कंपनियों ने इसे कभी माना नहीं।

सामाजिक संगठनों की ओर से बराबर मांग उठती रही, लेकिन सरकार नहीं जागी। (कान्ति से माखूज़)

इस्लामी फिक्ह में इमाम अबू ह़नीफ़ा का योगदान

डा० मो० रफी

इस्लामी फिकह के प्रथम तथा विश्व प्रसिद्ध विद्वान इमाम अबू हनीफा का जन्म सन ८० हिजरी में हुआ था। इनका वास्तविका नाम नोमान और उपनाम अबू हनीफा है। इनके पिता का नाम साबित तथा यह कूफा के रहने वाले थे। इनके पूर्वजों की गणना काबुल क वंशजों में की जाती है। इनके पिता रेशमी वस्त्रों का व्यापार करते थे प्रारम्भ में यह रेशमी वस्त्रों के व्यापार में लगे, तदुपरान्त इन्होंने धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने हेतु ध्यान दिया बअज सहाबा (हुजूर के साथियों) से भी मिले हैं उन्होंने जिन हजरात से हदीस का इल्म लिया उनकी गिन्ती हजारों तक पहुंचती है फिकह की शिक्षा कूफा के प्रसिद्ध फकीह हम्माद से प्राप्त की और धर्म ज्ञान में इतनी दक्षता प्राप्त कर ली कि अब्बासी खलीफा उनसे प्रभावित होकर उन्हें मुख्य न्यायाधीश का पद देना चाहा किन्तु इन्होंन इसे अस्वीकार कर दिया और कहा कि मैं अपने में इस पद की योग्यता नहीं पाता हूं। आज्ञा उल्लंघन का यह उत्तर सुनकर खलीफा मंसूर बहुत क्रोधित हुआ और उसने कहा, तुम झूठ बोलते हो! वास्तव में तुम इस पद के लिए उपयुक्त हो। इस पर इमाम अबू हनीफा ने उत्तर दिया कि आपने मेरी बात का समर्थन तो स्वयं ही कर दिया और मेरे विरूद्ध स्वयं निर्णय दे दिया। भला बताइयें यह कैसे वैध हो सकता है कि आप अपनी अमानत ऐसे मुख्य न्यायाधीश के सुपुर्द कर रहे हैं जो कि झूठा हो, लेकिन खलीफा मंसूर को इमाम अबू हनीफा का यह उत्तर संतुष्ट न कर सका और उसने इन्हें बन्दीग्रह में डाल दिया। इसी बन्दीग्रह में सन १५० हिजरी में उनका देहान्त हो गया।

इमामा अबू हनीफा की गणना इस्लामी फिकह के श्रेष्ट विद्वानों में की जाती है यह अरबी भाषा के साथ अपने समय के समस्त ज्ञान विज्ञान तथा साहित्य के ज्ञाता थे। वे तर्क विर्तक क्षमता से परिपूर्ण थे। अपनी बातो को कहने तथा उसे सिद्ध करने की शक्ति उनमें पूर्णतया विधमान थी।

इमाम मलिक ने एक अवसर पर उनके विषय में कहा था कि वो एक ऐसी तर्क विर्तक शक्ति के स्वामी है। जिसकी गणना नहीं की जा सकती।

इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह०) के दो महत्वपूर्ण योगदान हैं:–

१. **कियास** (किसी समस्या के शरअी समाधान के प्रकाश में उस से मिलती जुलती किसी नई समस्या का अनुमान द्वारा समाधान निकालना) इसकी शिक्षा अल्लाह के रसूल (स०) ने दी थी लेकिन मदीना नगर में जो समस्याएं (मसाइल) आती थीं वह किताब व सुन्नत से हल हो जाती थी इसलिए मदीना नगर में हुजूर (स०) की कियास शिक्षा का प्रचल न हो सका लेकिन इराक में नित्य नई समस्याऐं आती थी जिनका सीधे हल किताब व सुन्नत में न था वह सब कियास तथा इज्तिहाद से हल की जाती थीं। यदि कियास का प्रचलन न होता तो आज तो हजारों हजार ऐसी समस्याऐं (मसाइल) है जिनका सीधा हल किताब व सुन्नत में नहीं है, अल्लाह जजाए खैर दे, इमाम अबू हनीफा (रह०) को कि फिकह जगत में उनका बड़ा योगदान है कि उनहोंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कियास शिक्षा को चालित किया।

२. दूसरा बड़ा योगदान उनका हदीस के परखने के नियमों का है। इस्लाम के दुश्मनों ने हजारो हदीस गढ़कर हदीस के जखीरों में मिला दी थी निःसंदेह मुहद्दिसीन ने हदीसों के परखने के नियम बनाऐं लेकिन इमाम अबू हनीफा (रह०) ने सनदे रिवायत के साथ दिरायत (अक्ल से भी परखना) के जो नियम बनाए वह अनोखे हैं।

कुछ लोगों को गलत फहमी हुई और उन्होंने समझा कि इमाम अबू हनीफा ने हदीस को छोड़ कर अपनी राए को राइज कर दिया यह बात सहीह नहीं है। इमाम बाकर को भी ऐसी गलत फहमी हुई थी जिसे इमाम अबू हनीफा ने दूर किया था। इस सिलसिले में उन का यह कौल बहुत मशहूर है :

"इजा सह्हलहदीसु फह्व मजहबी जिस हदीस की सिहत साबित हो जाए वही मेरा मसलक है। इमाम साहिब के मशहूर शागिर्दों में काजी अबू यूसुफ मुहम्मद बिन हसन और जुफर बिन हुजैल वगैरह हैं।

इमाम अबू हनीफा की जीवनी देखने के लिए पढ़े आप उर्दू में "सीरतुन्नोमान" द्वारा अल्लामा शिब्ली नोमानी, "सीरत अइम्म–ए–अर्बअ" द्वारा रईस अहमद जाफरी नदवी।

अमल में इख़लास

अब्दुर्रशीद खैरानी

इस दुनिया में इंसान को आजमाईश के लिए पैदा किया गया है। इन्सान की जिन्दगी व मौत का वक्त भी मुकर्रर है। इस दुनिया की जिन्दगी के थोड़े से वक्त में इन्सान को अच्छा या बुरा करके जिन्दगी गुजारनी होती है। जो शख्स नेक अमल करते हुए जिन्दगी बसर करेगा उसे मौत के बाद की हमेशा रहने वाली आखिरत की जिन्दगी में जन्नत कें दाखिला मिलेगा जबकि बुरे और नाफरमानी वाले अमल व काम करने वाले को आखिरत में हमेशा आग में जलने वाली दोजख में जगह मिलेगी यह देखने में आता है कि आज कल ने काम और इबादत का तरीका ही बदल गयाहै अधिकतर हर नेक काम व अमल के साथ कोई न कोईबुराई का पहलू शामिल रहता है और इसे बड़े धूमधाम से बढ़ चढ़ कर किया जाता है कुर्आन मजीद की तिलावत तो की जाती है मगर कुरआनी आयतों को समझने, इस पर गौर करने और फिर अमल करने की जरूरत नहीं समझी जाती। कुरआन मजीद अल्लाह की किताब है और इसमें इन्सान की जिन्दगी गुजारने की पूरी तालीम व नसीहत है और कुरआन मजीद का यह हक है कि उसमें दर्ज फरमानों पर पूरा–पूरा अमल किया जाए तभी इन्सान कामयाब हो सकेगा।

इन्सान के हर अमल की पहली शर्त नीयत है। इन्सान की नीयत जैसी होगी उसका अमल भी वैसा ही होगा नेकी का जो भी काम हो चाहे इसका सम्बंध इबादत से हो या मामलात से हो, चाहे वह नमाज हो या रोजा या जकात या हज या अल्लाह के बन्दों की खिदमत यानी कोई भी नेकी का काम हो अगर इस नेकी के करने के पीछे अपना नाम करना या कोई दुनिया का फायदा हासिल करने की नीयत हो तो अल्लाह तआला के नजदीक इसकी कोई कीमत नहीं होगी और अगर इस नेक काम में अल्लाह की खुशनूदी और लोगों में अपना नाम करना होगा तो भी इसका कोई अच्छा बदला नहीं मिलेगा हर काम में इखलासे नीयत यानी हर नेकी के करने में महज अल्लाह तआला की रजामन्दी और खुशनूदी की नीयत होनी जरूरी है।

कुरआन मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है :–

१. बेशक हमने यह किताब तुम्हारी तरफ सच्चाई (हक) के साथ नाजिल की है इसलिए तुम अल्लाह की बन्दगी करो दीन को अल्लाह ही के लिए खालिस करते हुए। सूरः जुमर आयत –२

२. कह दो मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह ही की बन्दगी करू दीन को उसी के लिए खालिस करते हुए सूरः जुमर आयत ११

३. अल्लाह तआला का इर्शाद है– और खास उसी की इबादत करो और उसी को पुकारो सूरः आराफ–२६

इसी तरह कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने अनेकों जगह पर सिर्फ अल्लाह ही की इबादत करने और हर अमल को सिर्फ अल्लाह की खूशनूदी के लिए ही करने का साफ साफ हुक्म दिया है अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस दुनिया में सभी काम सिर्फ अल्लाह तआला की रजा के लिए अंजाम दिये हैं और दुनिया वालों को यह सबक दिया है कि जो शख्स भी इस दुनिया में कुरआन के फरमान और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिदायतों पर चलते हुए सिर्फ अल्लाह तआला की खूशनूदी के लिए अमल करेगा तो उसे दुनिया और आखिरत की कामयाबी जरूर नसीब होगी। इस बारे में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फरमान भी है।

१. हजरत अबू हुरैरः रजि अल्लाह तआला अन्हू रिवायत फरमाते है कि रसूलल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया बेशक अल्लाह तआला तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे मालों को नहीं देखाते बल्कि तुम्हारें दिलों को और तुम्हारे आमाल को देखते हैं। (मुस्लिम)

इस हदीस में बताया गया है कि किसी भी नेक अमल में अल्लाह तआला इन्सान के दिल के इखलास को देखता है और उसी के मुताबिक इन्सान बदला पाता है।

२. हजरत अबू हुरैर रजि अल्लाह तआला अन्हू से रिवायत है कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कियामत के दिन

लोगों को उनकी नीयतों के मुताबिक उठाया जाएगा यानी हर एक के साथ उसकी नियत के मुताबिक मामला होगा! (इब्ने माजा)

३. मदीना मुनव्वरा के एक साहब फरमाते हैं कि हजरत मुआविया रजि अल्लाह तआला अन्हू ने हजरत आइशा रजिअल्लाह तआला अन्हा को खत लिखा कि आप मुझको कोई नसीहत लिखकर भेज दें मुख्तसर हो ज्यादा लम्बी न हो। हजरत आइशा रजि अल्लाह ताआला अन्हा ने सलाम मस्नून और हम्दू व सलात के बाद लिखा। मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इर्शाद फरमाते हुए सुना :– जो शख्स अल्लाह ताअला की खुशनूदी की तलाश में लोगों की नाराजगी से बेफिक्र होकर लगा रहा, अल्लाह ताआला लोगों की नाराजगी के नुकसान से उसकी हिफाजत फरमा देंगे और जो शख्स अल्लाह तआला की नाराजगी से बेफिक्र होकर लोगों को खुश करने में लगा रहा, अल्लाह तआला उसे लोगों के हवाले कर देंगे।

''वस्सलामुअलैक (तुम पर अल्लाह तआला की सलामती हो) (तिमिर्जी)

हजरत अबू उमामा बाहिली रजि अल्लाह तआला अन्हू रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया :– अल्लाह तआला आमाल में सिर्फ उसी अमल को कुबूल फरमाते हैं जो खालिस (विशुद्ध) उन्हीं (अल्लाह) के लिए हो और उसमें सिर्फ अल्लाह तआला की खुशनूदी हासिल करने का मकसद हो। (नसई)

हजरत जैद बिन साबित रजि अल्लाह तआला अन्हू फरमाते हैं कि मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह इर्शाद फरमाते हुए सुना :– जिस शख्स का मकसद (ध्येय) दुनिया बन जाए का होता है अल्लाह तआला उसके कामों को बिखेर देते हैं यानी हर काम में उसको परेशान कर देते हैं, फक्र (गरीबी) का खौफ उसकी आंखों के सामने कर देते हैं और दुनिया उसे इतनी ही मिलती है जितनी उसके लिए उस की तकदीर में लिखी थी और जिस शख्स की नियत आखिरत की हो तो अल्लाह तआला उसके कामों को आसान फरमा देते हैं, उसके दिल को गनी फरमा देते हैं और दुनिया जलील होकर उसके पास आती है। (इब्ने माजा)

हजरत साद रजि अल्लाह तआला अन्हू फरमाते है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह इर्शाद फरमाते हुए सुना :– अल्लाह तआला परहेजगार मख्लूक से बेनियाज, गुमनाम बन्दे को पसन्द फरमाते हैं। (मुस्लिम)

हजरत सौबान रजि अल्लाह तआला अन्हू रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह इर्शाद फरमाते हुए सुना है कि :– इख्लास वालों के लिए खुशखबरी हो कि वे अंधेरों में चिराग हैं उनकी वजह से सख्त से सख्त फित्ने दूर हो जाते हैं। (बैहक़ी)

रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इन फरमानों से यह साबित हुआ कि इन्सान का हर अमल व नेक काम का दरोमदार उसकी नियत की इख्लाम पर होता हे इन्सान जो भी नेक अमल करता है तो इस अमल के करने में उसकी नीयत व मकसद अल्लाह तआला को खुश करना होना चाहिए। अगर नेक अमल को करने में रिया दिखावा, दुनिया का फायदा भी किया मख्लूक को खुश करने का मकसद व नीयत होगी तो अल्लाह तआला के यहां इसकी कोई कीमत नहीं होगी उलटे गुनाहगार साबित होगा हर शख्स को चाहिए कि सभी इबादते और नेक काम सिर्फ अल्लाह तआला की खुशी व रजा हासिल करने के लिए करें ताकि दुनिया और आखिरत में अल्लाह तआला की रहमत और रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिफाअत हासिल हो सके।

हज़रत अ़ली (रज़ि०) का इख़्लास

एक बार हज़रत अ़ली (रज़ि०) ने मुकाबले में एक काफिर को जेर करके उसका काम तमाम करना चाहा कि उस ने आप के मुंह पर थूक दिया बस आप उसे छोड़ कर अलग हो गये। फिर उस काफिर ही के पूछने पर आप ने बताया कि पहले मैं तुझे हरबी काफिर समझ कर अल्लाह वास्ते कत्ल करना चाहता था, लेकिन जब तूने मेरे मुंह पर थूक दिया तो नफ्स ने चाहा कि थूकने के बदले मैं तुझे कत्ल करें यह काम अल्लाह वास्ते न होता, नफ्स के लिये होता इस लिए मैं अलग हो गया।

नई किताब

समीक्षा

इदारा

पुस्तक का नाम – तालीमीजिहात
लिपि – उर्दू
लेखक का नाम – डा० एम० नसीम आजमी
मूल्य – रू० २००
पृष्ठ – ३३६
मिलने का पता – अलफहीम मऊनाथ भंजन, मकतब जामिया लिमेटेड, जामिया नगर, नई दिल्ली, प्रिंस बिल्डिंग बमबई–३ एजूकेशनल बुक हाऊस, शमशाद मार्केट अलीगढ़, दानिश महल, अमीरूदौला पार्क–लखनऊ, बुक इमपोरियम, सबजी बाग पटना–४

इस पुस्तक में डा० एम० नसीम आजमी ने अपने ३५ लेखों को एक लाभप्रद पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया है। यह सभी लेख शिक्षा प्राप्त करने, तथा हाईस्कूल के बाद प्रशिक्षण और रोजगार से संबंन्धित हैं। उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गो की क्षमता, माली हालत को सामने रखकर लिखी है। आम तौर पर विद्यार्थियों को शिक्षा सम्बंधी कोर्सेज, प्रशिक्षण और रोजगार के औसर की जानकारी नहीं होती। खासकर मुसलमान विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने वाला लिटरेचर उनकी पहुंच से बाहर होता है। यह पुस्तक इस कमी को पूरा करती है। हाईस्कूल से लेकर हायर सेकेण्ड्री, ग्रेजूऐशन, पोस्ट ग्रेजूएशन, सिविल सिर्वसेज़, मेडिकल नेट, साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग, एलेक्ट्रानिक, एकाउंटेंसी, लाइबेरीसाइंस, प्रिंटिंग व प्रकाशन, कम्प्यूटर सूचना टेक्नोलाजी, मैनेजमेंट आदि सभी आधुनिक विषयों की जानकारी इस पुस्तक में यकजा कर दी गयी है। यह पुस्तक विद्यार्थियों, अभिभावकों (सरपरस्तों) अध्यापकों और शिक्षा संस्थाओं के प्रबन्धकों का भरूपर मार्ग दर्शन करती है। इस पुस्तक में मुकबले की परीक्षाओं की तैयारी, आई०आई०टी० सिविल सर्विसेज आदि पर पूरी रोशनी डाली गयी है।

उर्दू में इन विषयों पर शायद यह पहली पुस्तक है जो सामान्य विद्यार्थियों तथा शिक्षा में पिछड़े हुए मुस्लिम समुदाय का भूरपूर मार्गदर्शन करती है। विद्यालयों में खास कर मुस्लिम विद्यालयों में इस पुस्तक को केवल उपलब्ध ही नहीं बल्कि हाईस्कूल और इंटर के विद्यार्थियों के लिए इसके विभिन्न विषयों पर कैरियर गाईड लेकचर का भी प्रबन्ध करना चाहिए ताकि जानकारी के अभाव में समुदाय और भी पिछड़ता न जाए।

कादियानी एक फित्ना (उर्दू)

बेशक उलमा विरसतुल अंबिया हैं, अब कियामत तक अल्लाह के आखिरी नबी हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नियाबत उम्मत के उलमा ही को करना है, शैतान को छूट मिली हुई है वह औलादे आदम को राहे हक से हटाने में सरगर्म है। नुबूवत खत्म हो चुकी तो कियामत तक अब कोई नबी पैदा न होगा, लेकिन शैतान तीस ऐसे दज्जालों को खड़ा करेगा जो सब के सब अपनी नुबूव्वत का दअवा करेंगे, उन्हीं दज्जालों में एक मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी भी है जिस ने नुबूवत का दअवा किया उस के पैरो कादियानी कहलाते हैं, वास्तव में कादियानियत एक फित्ना है जो अपने मुल्क के उन इलाकों में सरगर्म हैं जहां अम्र व निही का फरीजा अंजाम नहीं है जरूरत है ऐसी जगहों पर कादियानियत कें फितने का तअरूफ कराया जाए उलमा ने रद्दे कादियानियत पर बहुत कुछ लिखा है यह किताब्चा भी उसी तरह की एक कोशिश है, जिसे शोब–ए–दावत इरशाद ने छापां है, जिस के सफहात तो चालीस ही हैं लेकिन इसमें तमाम जरूरी मालूमात मुहय्या हैं। कीमत आठ रूपया है।

इस्लामी हथियार

मुहसिन खा

"जालिम से जुल्म का बदला लिया न कभी भी
मारा भी तो अखलाक की तलवार से मारा।"

बेशक दीन–ए–इस्लाम ने अखलाक की बुलन्द मकामी का जो मुजाहिरा किया है वह दुन्या के किसी भी मजहब ने नहीं किया।

ये बात बिल्कुल साफ तौर पर वाजेह है कि इस्लाम का सबसे बड़ा हथियार अखलाक है। इसी अखलाक के जरिये आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मजहबे इस्लाम को फैलाया, आप के बुलन्द अखलाक का नमूना सारी दुनिया में कयामत तक नहीं मिल सकता।

आप सल्ल० के अखलाक का ये हाल था कि जो आप सल्ल० को तकलीफें और उजियतें पहुंचाता आप सल्ल० उसको माफ कर देते जो आप सल्ल० को बुरा भला कहता आप सल्ल० उसके लिए दुआएं करते, जो आप सल्ल० को परेशान करता आप सल्ल० उसको आराम पहुंचाते, यहां तक कि अपने दुश्मनों के साथ भी अखलाक से पेश आते। आप सल्ल० अखलाक के बुलन्द मकाम पर सरफराज थे।

एक बार की बात है, एक शख्स का आप सल्ल० के साथ कुछ मुआहदा होता है, वह शख्स कहता है आप सल्ल० यहीं तशरीफ रखें मैं अभी आता हूं, और वह चले जाते हैं और भूल जाते हैं, तीन दिनों के बाद उस शख्स को याद आता है वह फौरन वहां हाजिर होते हैं तो देखतेहैं आप सल्ल० वहीं पर तशरीफ फरमा हैं और उस शख्स का इन्तजार कर रहे हैं, जब आप सल्ल० उस शख्स को देखते हैं उन्हें डांटा नहीं उनसे झगड़ा नहीं किया उन्हें बुरा भला भी नहीं कहा और न ही उनसे इस तकलीफ का बदला लिया, बल्कि उनके सामने अखलाक पेश करते हुए निहायत नरमी से और मिठास भरे अन्दाज में फरमाया – तुमने मुझे तकलीफ दे दी, मैं तीन दिन से यहां तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूं। इस वाक्य का उस शख्स पर इतना असर हुआ कि जब वह ये सुनते हैं कि मुहम्मद (सल्ल०) ने नबूवत का ऐलान किया है तो फौरन मुसलमान हो जाते हैं और कहते हैं बेशक ऐसा आला अखलाक एक नबी का ही हो सकता है।

हकीकी मानों में अखलाक क्या होता है? इसे जनाबे मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) की जाते करीमी ने पेश किया जिसके आगे सारी दुनिया ने अपना सरे तसलीम खम कर दिया।

जब आप (सल्ल०) को ताइफ वालों ने पत्थर मार–मार कर लहू लुहान कर दिया सिर्फ इस लिए कि आप (सल्ल०) हक की दावत दे रहे थे। उस वक्त भी वैसे हाल में भी आप (सल्ल०) की रहीम व करीम जात ने उन्हें बददुआ नहीं दी बल्कि फरमाया मुझे अल्लाह से उम्मीद है कि ये नहीं तो इनकी नस्लों से अल्लाह की परिस्तिश करने वाले लोग पैदा होंगे।

बिला शुबा आप (सल्ल०) ने कभी भी किसी से उसके जुल्म का बदला नहीं लिया बल्कि हमेशा उससे अखलाक से पेश आए।

आप (सल्ल०) ने अपनी उम्मत को भी अखलाक की तआलीम दी, हजरत हुजैफा (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया कि "तुम लोग इम्मआ न बनो के थे कहने लगे अगर लोग हमारे साथ अच्छा करें तो हम भी अच्छा करेंगे, और अगर लोग हम पर जुल्म करें तो हम भी जुल्म करेंगे। बल्कि तुम अपने आप को इसलिए तैयार करो कि लोग अच्छा सुलूक करें तो तुम भी अच्छा सलूक करो और अगर लोग बुरा सलूक करें तो तुम उनके साथ जुल्म व ज्यादती न करो।" (तिरमिजी)

अल्लाहो अकबर । ऐसे बुलन्द मकाम अखलाक वाले मजहब, जो अखलाक की तालीम देता है और जिस अखलाक के जरिये ये मजहब फैला, उस पाक मजहब पर तोहमत लगाइ जा रही है कि इस्लाम तलवार से फैला है। ये सरासर बेअकली और लाइल्मी वाली बात है। जो हजरात ऐसा सोचते हैं वो इस्लाम स नावाकिफ और आप (सल्ल०) की सीरत से अनजान हैं। वह जरा आप (सल्ल०) की सीरत पर और इस्लामी तालीमात पर एक नजर डालें उनकी तमाम गलत फहमियां दूर हो जाएंगी।

आप (सल्ल०) ने अपने उम्मतियों को ये तालीम दी है कि कोई तुम से बुरा सुलूक करे तो तुम जुल्म व ज्यादती न करो। मगर बड़े अफसोस की बात है कि हम मुसलमान होने का दावा करते हैं पर आप (सल्ल०) की तालीम पर

गौर नहीं करते हैं और अपनी बद अखलाकी की वजह से अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) को नाराज करते हैं और हम पर अफसोस भी नही होता और दूसरों को भी इससे तकलीफ पहुंचाते हैं।

अखलाक ही ऐसी चीज है जिससे हम अपने गैर मुस्लिम भाइयों को प्रभावित कर सकते हैं, वरना हमारी नमाज मस्जिदों में, रोजा पेट में, हज बैयतुल्लाह में और जकात अपने मुस्लिम भाइयों में ही अदा होती है, लेकिन हमारा लेन–देन , हमारा कारोबार हमारे मामलात गैर मुस्लिमों के साथ होते हैं और हम अपने अखलाक ही को उनके सामने पेश कर सकते हैं। लेकिन आज हमारे अखलाक ऐसे हैं कि खुदा हमारा मुस्लिम भाई हम से महफूज नहीं तो दूसरों को तो जाने दीजिए। हम जब किसी मामला करते हैं तो उसके साथ ऐसी बदअखलाकी से पेश आते हैं कि वह दोबारा हम से मामलात करने को तैयार नहीं होता।

अखलाक के आला मकाम वाली नबी की उम्मत ने आज अपने अखलाक को इतना नीचे गिरा दिया है कि एक मुसलमान अपने दूसरे मुसलमान भाई की शिकायत इस तरह करत है, "अरे वह तो बहुत बदअखलाक इंसान है।" ये कैसे हो सकता है? बद अखलाकी और वह भी एक मुसलमान के अन्दर कैसे आ सकती है। आप (सल्ल०) ने अपने जिन उम्मतियों को आला अखलाक की तालीम दी आज वही उम्मत का एक फर्द दूसरे फर्द के बद्अखलाकी की शिकायत करता है, सरापा अफसोस की बात है।

अजीजो! आखिर में ये अर्ज करना चाहूंगा कि आइये अच्छे अखलाक की हम अपना हथियार बनायें ताकि हमारे इस अखलाकी रूपी हथियार के वार से कोई बच न पाये। हम आप (सल्ल०) की तालीम पर अमल करें और अपने अखलाक को आला मकाम पर पहुंचाने की हर मुम्किन कोशिश करें और बदअखलाकी से पूरी तरह परहेज करें ताकि अल्लाह हमसे खुश हो और राजी हो जाए।

नफ़्ली ह़ज या अल्लाह की राह में ख़र्च

बार–बार हज करना कैसा है ? यह सवाल इसलिए अहम है कि नंफ्ली हज करने वालों की भीड़ से फर्ज हज अदा करने वालों को परेशानियां होती हैं।

जवाब : यह बात जानना जरूरी है कि मुसलमानों को जिसका प्रथम उत्तरदायी बनाया गया है वह है दीनी फराइज और इस्लाम के अरकान की अदायगी। नफ्लों की अपनी अहमियत है, जो बन्दे को खुदा का प्रिय पात्र बनाने और उसकी कृपा प्राप्त करने में सहायक होती है। अल्लाह के रसूल की हदीस है –

"अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरा बन्दा अपने जिन कामों से मेरा सामीप्य प्राप्त करता है, उन में सर्वाधिक प्रिय मुझे वे कर्म हैं, जिन्हें मैंने अपने बन्दों पर फर्ज किया है और मेरा बन्दा नफ्लों के जरिये बराबर मेरे समीप होता रहता है।" (बुखारी)

इस सिलसिले में कुछ नियमों का ध्यान रखना जरूरी है। पहली बात यह कि अल्लाह तआला नफ्ल कुबूल नहीं करता, जब तक कि फर्ज न अदा किया जाए। जो कोई भी नफ्ली हज या उमरा अदा करता है, और अपने ऊपर फर्ज जकात की अदायगी नहीं करता, उसका हज और उमरा कुबूल नहीं होता। ऐसे व्यक्ति पर प्राथमिक इस्लामी तकाजा यह है कि अपने माल की जकात अदा करके साफ कर ले। जो आदमी अपना कर्ज अदा नहीं करता या व्यापार सामग्रियों को इस्लामी नियमों के अनुसार सर्कुलेट नहीं करता उसके लिए जायज नहीं है कि ऐसा करने से पूर्व नफल हज अदा करे।

दूसरी बात यह कि अल्लाह कोई भी नफल इबादत कुबूल नहीं करता यदि उसके करने में किसी हराम काम के होने की संभावना हो। हराम काम के गुनाह से बचना नफल इबादत के सवाब से बेहतर है। मिसाल के तौर पर यदि नफ्ल हज अदा करने वालों की भीड़ से हाजियों के लिए मुश्किलें बढ़ जाएं। रोग फैलने लगे, दुर्घटनाओं में वृद्धि हो जाए। भीड़ इतनी बढ़ जाए कि लोग गिरने और पैरों तले रैंदे जाने लगें, तो यह आवश्यक हो जाता है कि भीड़ को कम किया जाए। उसके लिए मुनासिब हल यही है कि जो लोग पहले हज कर चुके हों, उन्हें एक निश्चित अवधि तक रोका जाए।

तीसरी बात यह है कि नफ्ली इबादतों और नेकियों का दायरा बहुत बड़ा है। इस लिऐ ऐसे कामों को चुनना चाहिए जो हालात और माहौल के लिहाज से ज्यादा महत्वपूर्ण हों। जैसे जरूरतमंदों और गरीबों का सदका करना, विशेषकर गरीब रिश्तेदारों पर। हदीसे रसूल है –

"मिसकीन को सदका देने का एक अज्र है और गरीब रिश्तेदारों पर दिये हुए सदके का दोहरा अज्र है। एक सदके का और दूसरा सद्व्यवहार का।" (अहमद, तिरमिजी, इब्ने माजा)

गरीब और तंगदस्त रिश्तेदारों पर खर्च करना सामर्थ्यवान मुसलमानों के लिए वाजिब है।

जेब्रे जैसा पक्षी हुदहुद

हुदहुद संसार के कुछ गिने–चुने पक्षियों में एक है, जो अपने भड़कीले पंखों के कारण सुन्दर पक्षियों में गिना जाता है। यह प्रवासी पक्षी भी है, इसलिए संसार के कुछ क्षेत्रों में यह मौसम विशेष में ही दिखायी पड़ता है। कुछ क्षेत्रों में यह एकदम दिखायी नहीं पड़ता है। अपने देश में यह बारहमासी पक्षी है।

हुदहुद के पंख काले सफेदध ाारी वाले जेब्रा की तरह धारियों वाले होते हैं। इन्हीं धारियों के कारण इस पक्षी को उड़ने वाला जेब्रा कहते हैं। हुदहुद सुनहरापन लिए हुए बादामी भूरा होता है। उदरभाग का रंग पीठ की अपेक्षा कुछ हल्का होता है। इस पक्षी के सिर पर परों की बनी एक तुर्रेदार पगड़ी जैसी कलगी होती है। चित्तियां ऊपरी किनारे पर होती हैं। कुछ पक्षियों में से ये चित्तियां या तो बहुत कम होती हैं या फिर होती ही नहीं। यह कलगी हाथ के फैंसी पंखें की तरह गोल–गोल रूप में खुलती और बंद होती है। आम रूप में तो यह कलगी प्रायः बंद ही रहती है। मगर खतरे का आभास होने पर चौकन्ना अवस्था में यह खुलती और बन्द होती है। इसके खुलने के समय पक्षी अक्सर उड़ जाती है।

हुदहुद कभी लंबी उड़ान नहीं भरता। उड़ान के दौरान यह अपनी कलगी खोल लेता है और जमीन पर उतरते समय उसे बंद कर लेता है। संभवतः इसकी कलगी उड़ान के दौरान संतुलन बनाये रखने में मदद करती है। यह अपनी नाटी टोंगों से बटेर की तरह दौड़ता भी है। दौड़ते समय यह बहुत अच्छा दिखता है। इन पक्षियों में नर और मादा एक जैसे दिखते हैं। नर मादा की अपेक्षा थोड़ा सा बड़ा होता है। नर व मादा का भेद आसानी से नहीं किया जा सकता। हुदहुद का आकार उसका जाति प्रजाति के अनुसार २०–३० सेंटी मीटर से ४०–४५ सेंटी मीटर तक हो सकता है। अपने देश में पायी जाने वाली प्रजाति का आकार २८–२९सेंटीमीटर लंबा होता है।

हुदहुद की चोंच कुदाल जैसी होती है। कुदाल जैसी चोंच के कारण कहीं–कहीं स्थानीय लोग इसे खुटपावड़ी कहकर भी पुकारते हैं। लंबी चोंच होने के कारण ही इसे अन्य पक्षियों से अलग उपूपिडी परिवार में रखा गया है। इसका नाम युपापा डयोप्स है। भोजन तलाश करने के दौरान इसकी चोंच चिमटी की तरह खुली रहती है। इसे खाने में केंचुए और छिपकलियां बहुत पसंद हैं।

यह कभी अकेला नहीं रहता है। नर और मादा सदैव साथ–साथ रहते हैं । कुछ जातियों के हुदहुद जोड़े में रहने के साथ–साथ झुंडों में भी रहते हैं। इस पक्षी का प्रजनन काल फरवरी–मार्च से मई तक और इसके बाद सितम्बर–अक्टूबर माह से आस पास होता है। इस प्रकार हुदहुद वर्ष में दो बार अंडे देती है।

प्रजनन काल में हुदहुद अपना घोंसला किसी वीरान इमारत की छत में दीवार आदि की दरार में या वृक्ष के खोखल आदि की दरार में या वृक्ष के खोखल या दीमक की बांबी आदि में बनाता है। वैसे यह देखने में जितना सुन्दर होता है, इसकी घोंसला उतना ही अधिक गंदा व भद्दा होता है और उसमें से तीव्र बदबू आती है। इस प्रकार बने घोंसले में मादा हुदहुद एक बार में पांच से छह तक और कभी–कभी आठ तक अंडे देती है। इसके अंडे चितकबरे रंग के होते हैं। पर इसके सभी अंडे कामयाब नहीं होते हैं। बच्चों का पालन–पोषण नर और मादा दोनों मिलकर करते हैं। पूरे तैयार होने तक बच्चों को घोसले में ही रखा जाता है।

हुदहुद की बोली मुलायम लेकिन तेज होती है। यह अक्सर हू--पो, हु–पो–पो जैसी संगीतमय आवाज निकालता है। कभी–कभी यह पक्षी ८–१० के अंतराल पर रूक रूक कर कूकता भी है। इसकी इसी आवाज के कारण इसे हूपो नाम दिया गया है। हुदहुद पक्षी नहाने का बहुत शौकीन होता है। जब जी चाहता है, तभी नहाने लग जाता है। जब कभी हुदहुद झुंडों में स्नान करते हैं तब बहुत ही सुन्दर दृश्य दिखता है। यह पक्षी प्रवासी पक्षी माना जाता है। दक्षिण पूर्व ऐशिया में यह प्रायः सर्दियों के मौसम में पाया जाता है।

हुदहुद ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को बिल्कीस की हुकूमत की खबर दी थी।

अहकामे तब्लीग़

मौलाना शाह अब्रारुल हक़्क़ (रह०)

१. बुरी बात से रोकना और अच्छी बात की तल्क़ीन करना (अमल करने को कहना) फ़र्ज़े किफ़ाया है। अगर किसी बस्ती में कोई भी यह काम नहीं करता तो सब लोग फ़र्ज़ के तर्क के वबाल में मुब्तला होंगे, अगर कुछ लोग काम कर रहे हैं और वहां की ज़रूरत पूरी हो जाती है तो सब के ज़िम्मे से फ़र्ज़ साक़ित हो जाएगा यअ्नी फ़र्ज़ अदा हो जाएगा और नसीहत करने वालों को बड़ा इनआम मिलेगा। (मिर्क़ात व तफ़सीरे मदारिक)

२. अगर ऐसी सूरत है कि सिवाए किसी ख़ास शख़्स के बुरी बात से कोई और रोक नहीं सकता या अच्छी बात अपनाने को नहीं कह सकता तो फिर उस ख़ास शख़्स पर इस्लाह फ़र्ज़े ऐन हो जाती है, जैसे वह शख़्स कि किसी की बुराई को वही जानता है और वही उस की इस्लाह की क़ुदरत रखता है। मिसाल के तौर पर किसी की बीवी किसी बुराई में मुब्तला हो, या उस का बच्चा किसी बुराई में मुब्तला हो जिस को वही जानता हो या किसी का मुरीद या शागिर्द किसी बुराई में मुब्तला है, जिसको वही जानता हो तो ऐसे लोगों की इस्लाह उस जानने वाले पर फ़र्ज़ ऐन है। (मिर्क़ात)

३. वाजिब बातों की तब्लीग़ वाजिब और मुस्तहब बातों की तब्लीग़ मुस्तहब है।

४. नसीहत के फ़र्ज़ होने की दो शर्तें हैं, पहली बात तो यह कि इस का यक़ीन हो कि नसीहत क़बूल होगी दूसरी बात यह कि किसी नुक़्सान का ख़तरा न हो जब यह दोनों बातें होंगी तो नसीहत फ़र्ज़ होगी वरना नहीं। (मिर्क़ात, इत्तिहाफ़)

५. ऊपर की दोनों बातें जहां न हो (कबूलीयत और ज़रर से अम्न अर्थात स्वीकृति तथा क्षति से सुरक्षा) वहां नसीहत फ़र्ज़ नहीं बलिक बअ्ज़ हालात में मना है। (इत्तिहाफ़)

६. ऐसे मजमेअ (जनसमूह) में मुन्कर (नाजाइज़ काम) हो जहां तब्लीगे इस्लाम में ज़रर से अम्न नहीं (क्षति से सुरक्षा नही) और क़बूलीयत (स्वीकृति) का यक़ीन नहीं, ऐसे मजमे में जाना मना है। ताकि उस मुन्कर में शिरकत न हो सख़्त ज़रूरत के बिना ऐसे मजमेअ से घुलने मिलने से बचता रहे, लेकिन ऐसी जगह से हिजरत ज़रूरी नहीं है अलबत्ता अगर ऐसी बस्ती है जिस में मुनकरात (बुरे कामों) से बचाव की कोई सूरत न हो और वहां से हिजरत करने की ताक़त हो तो वहां से हिजरत करना वाजिब है। (इत्तिहाफ़)

७. अगर ऐसा लगे कि बुरे कामों से रोकने की नसीहत करने में गालियां दी जाएंगी या झूठे इल्ज़ामात लगाए जाएंगे तो अच्छा हैं कि ऐसी जगह नसीहत न करे। (लेकिन ऐसी जगह नसीहत करना मेरे नज़दीक बहुत ऊंचा काम है।) (अनुवादक)

८. अगर ऐसा अनुमान है कि ऐसी जगह नसीहत करने से लड़ाई झगड़ा होगा तो वहां नसीहत न करना ही अच्छा है। (आलमगीरी) लेकिन बुराई को बुरा जानना ज़रूरी है – अनुवादक)

९. अगर गुमान हो कि नसीहत करने वाला मुख़लिफ़ीन की गाली गलोज और मार पीट बरदाश्त कर लेगा किसी से शिक्वा शिकायत न करेगा तो ऐसी सूरत में नसीहत करना मुस्तहब (सवाब का काम) है ऐसा शख़्स मुजाहिद है। (आलमगीरी)

१०. अगर गुमान हो कि नसीहत करने पर लोग न मारें पीटेंगे न गाली देंगे लेकिन बात न मानेंगे ऐसी जगह नसीहत मुस्तहब है। (आलमगीरी)

बअ्ज़ उलमा ने ऐसी सूरत में नसीहत करने को वाजिब बताया है। (इत्तिहाफ़)

११. अगर कोई ऐसी जगह है जहां नसीहत करने में क़त्ल का अन्देशा (भय) है, फिर भी उस ने नसीहत की और क़त्ल कर दिया गया तो वह शहीद होगा। (आलमगीरी)

१२. जिस पर नसीहत फ़र्ज़ थी उस ने नसीहत कर दी अर्थात बुरे काम से हिकमत से रोका लेकिन बुराई करने वाले ने नसीहत क़बूल न की तो अब नसीहत करने वाले पर दोबारा नसीहत करना फ़र्ज़ नहीं। (मिर्क़ात) (फ़र्ज़ तो नहीं लेकिन नसीहत करते रहने में सवाब है (अनुवादक)

१३. किसी शख़्स मसलन ज़ैद

ने देखा कि बकर किसी बुरे काम में मुब्तला है तो क्या उस के लिए मुनासिब है कि बकर के वालिद या निग्रां या हाकिम को इत्तिलाअ दे? इस के जवाब में उलमा की राए यह है कि अगर गुमाने ग़ालिब हो कि बकर के वालिद या निग्रां या हाकिम बकर को बुराई से निकालने की ताक़त रखते हैं तो इत्तिलाअ दे वरना चुप रहे। यही हुक्म मियां बीवी और हाकिम व रिआया का है। (आलमगीरी)

१४. अगर वालिद बेटे को किसी काम का हुक्म देना चाहें और अन्देशा (आशंका) हो कि वह न मानेगा तो तरग़ीब के उनवान से कहे कि बेटे ! मुनासिब होगा कि यह करो ताकि नाफ़रमानी से उस की आख़िरत का नुक़्सान न हो। (आलमगीरी)

१५. जो काम फ़र्ज़ है जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात या जो चीजें हराम हैं जैसे जुआ, शराब, ज़िना वग़ैरह उन में नकीर का हक़ सब को है, लेकिन दक़ीक़ (गूढ़) मसअलों में नकीर (रोकटोक) का हक़ आलिमे दीन को है उलमाए दीन को भी उन मसाइल में नकीर का हक़ है जिस में सब मुत्तफ़िक़ (सहमत) हैं, मुजतहिदीन के बीच इख़्तिलाफ़ी (मतभेद वाले) मसअलों में नकीर का हक़ नहीं।

१६. जो शख़्स क़ुदरत (सामर्थ्य) न रखने के सबब से मुन्कर (बुरे काम) पर नकीर न कर सके लेकिन बुराई को बुरा जानता रहे तो वह नजात पाने वाले मोमिनीन से है। (मिर्क़ात)

आदाबे तब्लीग़ :

अल्लाह तआ़ला ख़ुद अपने महबूब रसूल (सल्ल०) को मुख़ातब कर के फ़रमाता है : आप अपने रब की राह की तरफ़ लोगों को हिक्मत यअ़नी इल्म की बातों और अच्छी नसीहतों के ज़रीअ़े बुलाइये, और बहस व मुबाहसे की नौबत आजाए तो उन के साथ अच्छे ढंग से बहस कीजिए।

अल्लाह तआ़ला हज़रत मूसा और उनके भाई हारून अ़लैहिस्सलाम को फ़िरऔन को तब्लीग़ करने के आदाब इस तरह सिखाते हैं :

"मैं ने तुम को अपने लिये मुन्तख़ब किया (यअ़नी अपना नबी बनाने के लिय चुन लिया) तुम दोनों भाई मेरी निशानियां (यदे बैज़ा और अ़सा) लेकर जाओ, और मेरी यादगारी में सुस्ती न करना, तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ वह बहुत निकल चला है, फिर उस से नरमी से बात करना शायद वह नसीहत क़बूल कर ले या इलाही अ़ज़ाब से डर कर सीधे रास्ते पर आ जाए।

तब्लीग़ के साथ साथ इबादते लाज़िमी का भी एहतिमाम चाहिए।

इल्म व अमल

हम सब की तबाही और परेशानी का सबब दीन व ईमान की कमी है, जिस का सबब अल्लाह से तअ़ल्लुक़ की कमी और उसको याद रखने में ग़फ़लत है, याद रखें दिल का सुकून अल्लाह की याद ही से मिलता है। जैसा कि सूर–ए–रअ़द की आयत २८ में बताया गया है "जो लोग ईमान लाए और उन के दिल अल्लाह की याद से सुकून पाते हैं, सुन लो अल्लाह की याद से दिलों को सुकून मिलता है।" पस हक़ीक़ी चैन व सुकून ख़ुदा की याद और उसकी कामिल इताअ़त (पूर्ण आज्ञा पालन) के बिना मिल नहीं सकता, और हम पर जो मुसीबतें आती हैं वह अल्लाह के फैसले ही से आती है। इस को एक अल्लाह वाले शअ़िर ने यूं समझाया है।

बलायें तीर और फलक कमां है
चलाने वाला शेह शहां है
उसी के ज़ेरे कदमअमां है
सिवा उस के मफ़र कहां है।

और दीन व ईमान की कमी का सबब इल्म व अ़मल की कमी है जब तक यह दोनों बातें हमारे अन्दर इनफ़िरादन (अलग अलग, एक एक में) व इजतिमाअ़न (समाज में) पैदा न होंगी, दीन व ईमान के पूरे फ़ाइदे हम को मिल न सकेंगे।

पवित्र क़ुर्आन के साथ हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए
पवित्र क़ुर्आन के पाठ की प्रमुखता

अनुवाद : अताउल्लाह सिद्दीक़ी

तिलावत की फजीलत :

शब्द (तिलावत) पाठ विशेष रूप से कुर्आने करीम के लिए प्रयोग होता है अर्थात हदीस रसूलुल्लाह सल्ल० तक के लिए पढ़ना बोला जाता है। इसीलिए इस को ईशवाणी गैर मतलू कहते हैं। कुर्आन करीम के पाठ पर बहुत ज्यादा अज्र व सवाब का वादा किया गया है। जबकि मुहम्मद सल्ल० जिन पंर ईशवाणी अवतरित की गयी उनकी बिअ़सत का मकसद यूं बताया गया।

बेशक अल्लाह तआला ने ईमान वालों पर बहुत बड़ा एहसान किया है कि उन में उन्हीं में से एक सन्देष्टा भेजा जो उनके लिए पवित्र ग्रन्थ (कुर्आन) का पाठ करता और उनकी अन्तरात्मा का शुद्धीकरण करता है। तथा उनको किताब हिकमत सिखाता है। अन्यथा इससे पूर्व वह खुली हुई गुमराही में ग्रस्त थे।

सूरह ताहा में ईमान वालों के गुण की व्याख्या करते हुए कहा बेशक जो लोग अल्लाह की किताब (कुर्आन) का पाठ करते हैं। और नमाज पढ़ते हैं। (इस्लामी समाज की पहचान मुख्य रूप से नमाज कायम करना है) और हमारे द्वारा दिए हुए रिज्क (उसमें हर नेअमत शामिल है।) में से छुपाकर और कभी किसी अवसर के अनुरूप खुले आम (अल्लाह के बन्दों पर) खर्च करते हैं वह यकीनन ऐसा व्यापार है। जिस में इन को बिलकुल घाटा या हानि नहीं होगी, बल्कि अल्लाह रब्बुल इज्जत उनको पूरे पूरे अज्र देने के साथ–साथ अपनी कृपा से बहुत ज्यादा बढ़ाकर अता करेगा, बेशक वह तो बख्शने वाला कद्रदान है।

हजरत अबू उमामा रावी हैं। उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह फरमाते हुए सुना पवित्र कुर्आन पढ़ा करो कि क़ियामत के दिन वह अपने पाठ (तिलावत) करने वालों के लिए अल्लाह के दरबार में सिफारिशी बन कर हाजिर होगा।

हजरत इब्न मसअूद रज़ि० की रिवायत हैं हुजूर सल्ल० ने फरमाया : जिस ने कुर्आन का एक अ़क्षर पढ़ा उसको एक नेकी और वह नेकी उस जैसी दस नेकियों के बराबर होगी। मेरा मतलब यह नहीं कि अलिफ लाम मीम एक अक्षर है बल्कि अलिफ एक अक्षर और लाम एक अक्षर और मीम एक अक्षर है।

हजरत अबू सईद खुदरी रज़ि० नबी करीम (सल्ल०) से रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआला फरमाता है कि "जो कुर्आन करीम का पाठ (तिलावत) करने में इस प्रकार विलीन हो गया हो कि अपने लिए मुझसे कोई प्रार्थना करना भूल जाए तो उसको मैं उनसे जियादा बेहतर दूंगा जो प्रार्थना करने वालों को देता हूं और अल्लाह के कलाम की बड़ाई तमाम बातों पर ऐसी है जैसे अल्लाह की बड़ाई और अजमत अपनी मखलूक पर है।

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० की रिवायत है कि मुहम्मद (स०) ने फरमाया क़ियामत के दिन रोजा और कुर्आन दोनों अनुमोदन करेंगे, रोजह दार के लिए रोजा (व्रत) कहेगा हमने इस को खाने और इच्छाओं से रोके रखा था, मेरे रब हमारी सिफारिश स्वीकार कर और पवित्र कुर्आन कहेगा कि मेरी तिलावत (पाठ) ने इस बन्दे को सोने से रोके रखा ऐ हमारे रब मेरी सिफारिश स्वीकार कर फिर दोनों की सिफारिश स्वीकार करली जायेगी।

हजरत अबू हरैरह रजि० ही से रिवायत है कि हुजूर स० ने फरमाया : ईर्ष्या सिर्फ दो चीजों में जायज है पहला यह कि अल्लाह तआला ने किसी व्यक्ति को कुर्आन मजीद सीखने की तौफीक दी और वह रात दिन उसके पाठ मे विलीन रहा उसके पड़ोसी ने सुना तो कहा काश मैंने सीखा होता तो मुझे भी कुर्आन पढ़ने की ऐसी तौफीक होती तो मैं भी वही करता जो यह कर रहा है। दूसरा कर्म यह कि अल्लाह ने किसी को धन व दौलत दिया और वह अल्लाह की राह में अपना धन खर्च करता रहे और दूसरा व्यक्ति अगर निध नि है इसलिए ईर्ष्या करे कि काश मैं भी धनवान होता उसकी तरह अल्लाह की राह में धन खर्च करता, यहां (हसद) ईर्ष्या का अर्थ रश्क है जबकि रशक करना जायज है और ईर्ष्या हृदय का रोग है।

हजरत अबू हुरैरह रज़ि० ने एक

और हदीस में रसूल सल्ल० का कथन नकल किया है कि जिस घर में कुर्आन का पाठ किया जाता है उस घर वालों के लिए कुशादगी और धनदौलत में बढ़ोतरी होती है। और यहां तक कि वहां रहमत के ईशदूत अवतरित होते हैं। और शयातीन उस घर से निकल जाते हैं इसके विपरीत जिस घर में पवित्र कुर्आन का पाठ नहीं किया जात उस घर से फरिश्ते चले जाते हैं और वहां शैतान आकर बस जाते हैं तो उस घर के लोगों के लिए खैरा वबरकत उठ जाती है। और उस की जगह तंगी व कठिनाई ले लेती है।

हजरत अब्दुल्ला बिन उमर रजि० से रिवायत हे कि रसुलुल्लाह (स०) ने इरशाद फरमाया : कियामत के दिन कुर्आन के पाठक से कहा जाएगा (पढ़ उसी तरह जिस तरह तू दुनिया में पढ़ा करता था और स्वर्ग में उच्च पद पर ग्रहण करता जा तेरा लक्ष्य वहां है जहां तू अन्तिम आयत पढ़ रहा होगा। (उच्चपद की सीमा क्या होगी? यह अल्लाह ही जानता है।)

पवित्र कुर्आन का चमत्कार

मनुष्य के हृदय पर कुर्आन का जो प्रभाव होता है। उस भावना को शब्दों में व्याख्या करना आसान नहीं है। सत्य तो यह है कि ईश्वरवाणी की आलौकिक प्रभाव यह प्रभावकारी करिश्मा शब्दों का मोहताज नहीं है। यह एक ऐसा अन्दरूनी एहसास है जिस में अगर हृदय व आत्मा साथ साथ सम्मिलित होते हैं। तो किस कलम में या जबान में इसके इज़्हार की ताकत होगी? और कोई दूसरा क्योंकर अनुमान लगा सकता है। सच यह है कि सुनने वाला मुस्लिम हो या काफिर जो भी सुनेगा उसका हृदय पत्थर न हो तो वह प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सकता।

तअ़्लीम व तर्बियत

इस अंक में कई लेख तअ़्लीम व तर्बियत से मुतअ़ल्लिक़ हैं जिन का मक़्सद इस राह में काम करने वालों को हिदायत (निर्देश) देना नहीं बल्कि इस ओर सोचने और इस विषय (मज़्मून) पर ध्यान देने पर आमंत्रित करना (दअ़वत देना) है। ज़ाहिर है (प्रत्यक्ष है) इस मौज़ूअ़ (विषय) पर जिस ने जो कुछ लिखा है आसमानी तअ़लीमात (आकाशिक शिक्षा) से नहीं, अपने तजरिबात (अनुभवों) से लिखा है लेकिन तमाम तअ़लीमी माहिरीन (शैक्षणिक विशेषज्ञों) ने मान लिया है फिर भी गुंजाइश है कि एक तजरिबेकार (अनुभवी अपने लाभदायक परामर्शों) मशवरों से इस राह में काम करने वालों को फ़ायदा पहुंचाए।

मैंने इस अंक के पृष्ठ २६ पर एक अख़बारी ख़बर छापी है। मैंने इस मौज़ूअ़ पर तअ़लीम व तर्बियत का काम करने वालों से खूब बातें की हैं। कुछ मारतू खां टीचर जिन पर कोई पाबन्दी लगाना मुम्किन नहीं उन्होंने तो साफ़ कहा कि मेरे शागिर्द तो मार ही से पढ़ते हैं और जो पढ़ाता हूं उस में कमज़ोर नहीं होते। कुछ टीचरों ने माना कि बे मारे पढ़ाया जा सकता है लेकिन उस में टीचर को तदबीरें करना होंगी जब कि मारने वाले टीचर के शागिर्द डन्डे के आगे वह खुद तदबीरें सोचते हैं। मगर इस दौर में जब कि ट्रेनिंग के बिना कोई टीचर नहीं हो सकता बच्चों को मारे बिना तदबीरों ही से पढ़ाना चाहिये, ऐसे में जो टीचर मारने की ज़िद पर अड़े हुए हैं मुहज़्ज़ब मुआशरे (सभ्य समाज) में उन का कोई मक़ाम नहीं।

शरारत पर मारना :

छोटे बच्चों की शरारत की इस्लाह के लिए मदरसा (स्कूल) सोच समझ कर ऐसी सज़ा दे सकता है जिस से बच्चा शरारत से रूक जाए अभी वह ना समझ है शरारत के नताइज से बेख़बर है, इम्कान है कि मुनासिब जिस्मानी सज़ा से शरारत से बाज़ आ जाए लेकिन यह जिस्मानी सज़ा इस्लाह के लिए हो न कि उस का कोई अ़ज़्व (अंग) बिगाड़ देने के लिए, क़ाबिले ग़ौर है कि हदीस में मुंह पर मारने से रोका गया है।

बोर्डिंग में सजा :

बोर्डिंगें तीन तरह की नज़र आती हैं। अअ़्ला तालीम की यूनीवर्सिटियों में वहां तो जिस्मानी सज़ा को सोचा भी नहीं जा सकता। आज कल के कुछ मार्डन स्कूलों में जिन का निज़ाम इतना चौकस रहता है कि वहां न शरारत का मौक़अ़ न सज़ा की ज़रूरत, कभी कुछ हुआ भी तो मअ़्मूली तंबीह काफ़ी होती है। सब से अहम मसअला है दीनी मदारिस की बोर्डिंगों का जहां हमा वक़्त निगरानी के निज़ाम में कमी और मुख़्तलिफ़ सिक़ाफ़तों से आए हुए तलबा के सबब आए दिन मसाइल आते रहते हैं, वहां जिस्मानी सज़ा की ज़रूरत पड़ती है जिस का फ़ैसला ज़िम्मेदारान सोच समझ कर कर सकते हैं। लेकिन वहां कभी बर वक़्त (इन टाइम) हाथ छोड़ देने की ज़रूरत पेश आ जाती है, मसलन निग्रां ने बच्चे को सोते से जगाया कि बच्चा इस्तिंजे वग़ैरह जा कर नमाज़ की तैयारी करे लेकिन बच्चा नींद के सबब सुस्ती कर रहा है। ऐसे में निग्रां बरवक़्त एक दो हाथ मार देता है कभी वह हाथ भारी पड़ जाता है और बच्चे को नुक़सान पहुंच जाता है चाहिए कि निग्रां के हाथ में प्लास्टिक का बल्ला हो उसी से पिटाई करे।

(पृष्ठ ४० का शेष)

की आशा है। देश से साफ्टवेयर और सूचना तकनीक (आईटी) सेवाओं का निर्यात मौजदू साढ़े तेइस अरब डालर से बढ़कर वर्ष २००८ में ६० अरब डालर सालाना के स्तर पर पहुंच जाएगा।

यही नहीं, निर्यात के इस इजाफे से वर्ष २००८ के अंत तक ६० लाख नए रोजगार सृजित हो जायेंगे। वर्ष २००८ में साफ्टवेयर निर्यात बढ़कर सकल घरेलू उत्पाद (जीपीडी) के सात प्रतिशत के बराबर हो जाएगा। पिछले वित्त वर्ष में यह जीडीपी का ४.८ प्रतिशत ही था। हालांकि आने वाले समय में इस उद्योग में पांच लाख प्रतिशत कर्मचारियों की कमी होगी, इसलिए शिक्षा तंत्र को सुधारने की जरूरत है।

सेहत और पढ़ाई–लिखाई पर हो रहा अधिक खर्चा

यदि आपको यह लगता है कि कमाई बढ़ने के साथ साथ लोगों का खाने पहनने पर खर्च बढ़ रहा है तो आप गलत हैं दरअसल पिछले कुछ सालों से स्वास्थ्य देखभाल, पढ़ाई लिखाई परिवहन और संचार पर लोग ज्यादा खर्च करने लगे हैं। एक अध्ययन में कहा गया है कि आय बढ़ने के साथ साथ लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति जयादा जागरूक और सजग होने लगे है। इसके अलावा उनकी व्यस्तता बढ़ने से परिवहन और संचार माध्यमों का उपयोग भी बढ़ता जा रहा है। खान पान पर उनका खर्च पहले के मुकाबले कम हुआ है वहीं दूसरी तरफ शिक्षा और स्वास्थ्य में बढ़ा है। यहां तक कि धूम्रपान और नशीले पदार्थों पर होने वाला खर्च का अनुपात भी पहले के मुकाबले कम हुआ है। वाणिज्य एवं उद्योग मंडल (एसोचैम) के पिछले छह सालों में खर्च के तौर तरीकों पर किये गये अध्ययन के मुताबिक आय बढ़ने के साथ साथ लोगों का स्वास्थ्य पर कमाई का १२ प्रतिशत, शिक्षा पर १५ प्रतिशत और परिवहन एवं संचार साधनों पर २५ प्रतिशत तक खर्च होने लगा है। जबकि खाने पीने और पहनने पर खर्च का अनुपात कम हुआ है।

कुल खर्च में खान पान हिस्सा ५२ प्रतिशत से घटकर अब ४० प्रतिशत, कपड़ों का खर्च १० प्रतिशत से घटकर ५ प्रतिशत और धूम्रपान तथा मादक पेय पदार्थ पर एक प्रशित से घटकर करीब आधा प्रतिशत ही रह गया है। ऐसाचैम ने १९९९–२००० से लेकर २००५–०६ के बीच लोगों के निजी खर्च के तौर तरीकों में आते बदलाव का अध्ययन किया जिसमें पाया गया कि स्वास्थ्य देखभाल पर जहां पहले लोग मात्र चार प्रतिशत ही खर्च करते थे अब यह अनुपात बढ़कर १२ प्रतिशत हो गया।

लोग शिक्षा पर अपनी कमाई का पहले ५.५ प्रतिशत खर्च करते थे, वह पिछले साल तक बढ़कर १५ प्रतिशत औरपरिवहन एवं संचा माध्यमों का खर्च १३ प्रतिशत से बढ़कर २५ प्रतिशत तक पहुंच गया है। ऐसोचैम अध्यक्ष अनिल कुमार अग्रवाल के मुताबिक कुछ तो कारोबारी आदमी की जरूरते बढ़ने की वजह से खर्च बढ़ गये और कुछ आम मध्यमवर्गीय परिवार के रहन सहन के स्तर में सुधार आने से स्वास्थ्य व शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी।

मअ़लूमात हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के

दस चचा थे उन में से दो ईमान ले आए थे :

१. ह़ज़रत ह़मज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु यह ग़ज़्व–ए–उ़ह़ुद में शहीद हुए और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने आप को सय्यिदुश्शुहदा का ख़िताब दिया। दूसरे ह़ज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु।

आप सल्ल० की पांच फूफियां थीं उनमें से सिर्फ़ ह़ज़रत सफ़ीया ईमान लाई थीं। (रज़ियल्लाहु अ़न्हा) आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने अपने जिन दस साथियों को एक ह़दीस में जन्नत की बशारत दी वह अ़शर–ए–मुबश्शरः कहलाते हैं उनके नाम यह हैं :

१. ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) २. ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ३. ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०) ४. ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ५. ह़ज़रत सअ़द ६. ह़ज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वाम (रज़ि०) ७. ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि०) ८. ह़ज़रत तलह़ा बिन उ़बैदुल्लाह (रज़ि०) ९. ह़ज़रत अबू उ़बैदुल्लाह (रज़ि०) १०. ह़ज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम जमीअ़न)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी

यही हाल रहा तो सदी के अन्त में होगा प्रलय

यदि वायुमण्डल का तापमान इसी तरह बढ़ता रहा तो २१ वीं सदी के अंत में प्रलय जैसी स्थिति पैदा होगी। इस विश्ववयापी तापक्रम वृद्धि के कारण हिमनदियां पिघलकर समुद्र में जा मिलेंगी। इस वजह से समुद्र में आये तुफान से पृथ्वी के निचले हिस्से पानी में डूब जायेंगे। हिमनदियां के पिघलने से नदियों के स्रोत सूख जायेंगे। और सूखे की स्थितियां पैदा होंगी।

पृथ्वी के मौसम में ओय बदलाव के कारण उसकी उत्पत्ति से लेकर अब तक पांच महाविलुप्तियां हुई हैं जिनमें अंतिम डायनोसार की विलुप्ति थी। अब छठी में स्वयं मनुष्य की विलुप्ति का खतरा गहरा रहा है। सर्वनाश की इस चिंता के कारण ही भू–विज्ञान को वर्ष २००७ की राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस की थीम चुना गया है। यह कहना था कि जनवरी २००७ में होने वाली राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस के अध्यक्ष श्री प्रो० हर्ष के गुप्ता का जो बीरबल साहनी पुरावनस्पति विज्ञान संस्थान के हीरक जयंती समारोह में भाग लेने यहां आये थे। भूमण्डलीय तापवृद्धि पर चिंता जताते हुए प्रो० गुप्ता ने कहा कि इस के कारण २१ वीं सदी के अंत में पृथ्वी की सतह का तापमान ४–५ डिग्री सेल्सियस बढ़ जाएगा। यह भविष्यवाणी इंटरनेशनल पैनल आफ क्लाइमेटिक चेंज (आईपीसीसी) द्वारा की गयी है। उन्होंने कहा कि पिछले पांच वर्षों में पृथ्वी का तापमान जिस तेजी से बढ़ रहा है उससे वैज्ञानिकों की यह भविष्यवाणी सच साबित होती जान पड़ती है। २० वीं सदी के आरम्भिक वर्षों में ही उसमें दस गुना वृद्धि देखने को मिली है। ऐसे में हिमनदियों की बर्फ पिघल रही है।

गंगोत्री ग्लेशियर के पिघलने के कारण गोमुख अब पहले से लगभग सौ मीटर पीछे चला गया है। इसी प्रकार अंटार्कटिका पर स्थित दक्षिण गंगोत्री ग्लेशियर पिघल कर लगभग २१ मीटर कम हो चुका है। इसके मुख स्थान पर गड्ढा बन गया है। ग्लेशियरों का पानी पिघलकर समुद्र में मिल रहा है। समुद्री सतह बढ़ने के कारण बाढ़ और सुनामी जैसी आपदाओं का खतरा भी बढ़ेगा। ग्लेशियर पिघल जाने से नदी के स्रोत सूख जायेंगे। ऐसे में पीने की समस्या से निपटने के लिए लक्षद्वीप के कवाराथी में समुद्री खारे जल से फ्लैश इवापोरेशन द्वारा मीठा जल बनाने का संयंत्र भारत ने तैयार किया है। इसमें मात्र १०–१२ पैसे प्रति लीटर के खर्च से प्रतिदिन १,३०,००० लीटर पानी तैयार किया जाता है।

बर्फीले ध्रव वैज्ञानिकों के लिए अबूझ पहेली

ज्योतिष शास्त्रियों के मुताबिक शांत समझे जाने वाला बुध ग्रह खगोल वैज्ञानिकों (माहिरे फलकयात) के लिए किसी पहेली से कम नहीं है। इस ग्रह के पोलर कैप यानि बर्फ से ढके दोनों ध्रवों का राज जानने के लिए दुनिया के सैकड़ों खगोल विज्ञानी निरंतर अध्ययन में जुटे है।

मालूम हो कि सौर परिवार का नन्हा ग्रह बुध ग्रह सूर्य के नजदीक है। सूर्य के निकट होने के कारण पहले माना जाता था कि इस ग्रह का वातावरण काफी गर्म होगा, परन्तु इस संभावना पर विराम लगाते हुए निरंतर शोध के बाद वैज्ञानिकों ने स्पष्ट कर दिया कि इसके दोनों छोर बर्फ से ढके हैं। पोलर कैप के नाम से पहचाने जाने वाले इसके दोनों छोर समय समय पर घटते बढ़ते रहते हैं। पोलर कैप का घटाव बढ़ाव खगोल वैज्ञानियों के लिए अब तक पहेली बना है। आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) के निदेशक प्रो० राम सागर के अनुसार बुध ग्रह के वातावरण में पता लगाना खगोल वैज्ञानिकों के लिए चुनौती बनी है, लिहाजा विश्व के खगोल विशेषज्ञ इस ग्रह के बारे में विस्तृत जानकारी जुटाने के लिए लगातार अध्ययन कर रहे हैं। इस धटना का नजारा पूर्वेत्तर भारत के कुछ ही भागों में मात्र दो मिनट तक देखा गया।

साफ्ट वेयर क्षेत्र में ६० लाख रोजगार

साफ्टवेयर के मोरचे पर साफ्टवेयर सूचना तकनीकि उद्योग का शान्दार प्रदर्शन भविष्य में जारी रहने

(शेष पृष्ठ ३६ पर)